UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180787

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82/V31B Accession No. G.H. 1988

Author वर्मा, वृन्दावनलाल ।

Title बांस की फांस । 1947

This book should be returned on or before the date last marked below.

बांस की फांस

(सामाजिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट

(लेखक—झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कचनार, मुसाहिबजू,
गढ़-कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, अचल मेरा कोई, लगन,
राखी की लाज, कुण्डली-चक्र आदि)

प्रथम संस्करण

'मयूर-प्रकाशन'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

मूल्य १)

प्रकाशक—
सत्यदेव वर्मा बी. ए., एल एल. बी.
मयूर-प्रकाशन. झाँसी ।

प्रथमावृत्ति—१९४७

अनुवाद और चित्रपट निर्माण आदि के सर्वाधिकार लेखक के अधीन हैं ।

मूल्य एक रुपया

मुद्रक—
स्वाधीन प्रेस, झांसी ।

परिचय

जन्मपत्रियों को मिलाने के बाद विवाह करने की प्रथा हमारे यहां अभी ज़ोर पर है। इसमें रोमान्स को कोई गुञ्जाइश नहीं। मालूम तो ऐसा ही पड़ता है। परन्तु कभी कभी जन्मपत्रियों की रूखी प्रथा से कुछ अद्भुत भी निकल पड़ता है।

जन्मपत्रियों के एक विधाता एक दिन मेरे पास आए। उनसे एक विलक्षण घटना का पता लगा।

एक भिखारिन और उसकी लड़की, घर में—या झोपड़ी में—और कोई नहीं। लड़की के ग्रह उतने ही प्रबल जितना उसका सौन्दर्य। वर दूसरे गाँव में रहता था। जन्मपत्री के मिलान के लिए वर के पिता ने ज्योतिषी को बुलवाया। वर की आयु कुछ अधिक होगई थी। होने वाले सम्बन्ध की चर्चा के फैलते ही जातपांत का जनमत बौखला उठा। भिखारिन की लड़की के साथ ब्याह! और वह भी, जाति की होते हुए भी, नीचे कुल की!! परन्तु लड़की सुन्दर थी और वर उसको चाहता था। यदि जन्मपत्रियाँ मिल गईं तो, मानो, भगवान ने लड़की लड़के को एक दूसरे के ही लिए सृजा था।

लड़के की जन्मपत्री मिल जाय तो जातपांत बड़ी या भगवान—जिन्होंने इस जोड़ी को एक दूसरे के लिए ही संसार में जन्म दिया है? जन्मपत्रियों के मेल खा जाने पर सदा के लिए समस्या हल। बस।

जन्मपत्रियों के मेल और जातपांती—जनमत के बीच का विवाद ज्योतिषी जी ने हल कर दिया। केवल सात सौ रुपया लेकर। जन्मपत्रियाँ मिल गईं। ज्योतिषी जी ने ब्याह करवा देने का ज़िम्मा ले लिया।

परन्तु भिखारिन का सन्देह जगा दिया गया। जातपांत वाले न तो खुद चैन से बैठते हैं और न दूसरों को चैन लेने देते हैं। उन्होंने इन लोगों को भी चैन न लेने दिया। एक दूसरे ज्योतिषी प्रकट हुए। जन्मपत्रियाँ न मिल सकीं और लड़की लड़के के अभिभावकों ने सम्बन्ध तोड़ दिया। ज्योतिषी जी पर सात सौ रुपए की नालिश हो गई।

जन्मपत्रियां मिल जातीं, अर्थात् यदि जाति की रक्षा के ठेकेदार उनको मिल जाने देते, तो बिना किसी मीनमेख के विवाह हो जाता।

परन्तु वर-वधू ने अपने हाथों अपने सुख को पकड़ लिया। जातपांत टापती रह गई और उन्होंने चुपचाप विवाह कर लिया। अभिभावक नाराज़ हो गए; वे दोनों अपने जीवन-निर्वाह के लिए उद्योग करने लगे।

ज्योतिषी जी नालिश के परिणाम से बचने का उपाय पूछने के लिए मेरे पास आए। मैंने उनको सलाह दी कि जिस प्रकार वर-वधू चुपचाप सुखी हो गए हैं उसी प्रकार आप भी चुपचाप सात सौ रुपया वापिस करके मौज करिए!

उन्हीं दिनों एक स्वयम्बर के छोटे से रूप का मुझको पता लगा। वर ने पढ़ी लिखी लड़की पर अपनापन प्रकट किया। उसका कुछ हित भी साधा। परन्तु वह तबियत का ज़रा उथला था। साधारण से अहसान को बड़ा दिखला-दिखलाकर कहने की प्रवृत्ति ने लड़की में ग्लानि उत्पन्न कर दी। लड़की बांस की ठोकर, शायद, सह लेती, परन्तु फाँस की चुभन को न सह सकी, और उसने ब्याह से बिलकुल इन्कार कर दिया।

इधर हमारे विद्यार्थियों में आचरण का जो असंयम और भोंडापन, तथा साथ ही कभी कभी उन्हीं विद्यार्थियों में त्याग की महत्ता दिखलाई पड़ती है उसकी समन्जस ने मनोविश्लेषण के लिए एक अच्छी सामग्री दी।

"बाँस की फाँस" में ऊपर लिखी हुई दोनों घटनाओं, और उस सामग्री को एक स्थान और समय में बिठलाने का प्रयत्न किया गया है। मेल खिलाने के लिए किसी ज्योतिषी की ज़रूरत नहीं पड़ी।

बिना सात सौ रुपया खर्च किए हुए मैं "बाँस की फाँस" को अपने सच्चे ज्योतिषी—पाठक—के हाथ में रखता हूं। उससे भी बढ़िया मेरा ज्योतिषी रङ्ग मंच पर अभिनय करने वाला खिलाड़ी है। शायद "बाँस की फाँस" के सिवाय इसको भी कुछ और नहीं देना पड़ेगा, और आशा करता हूं कि वह उसको आंसेगी भी नहीं।

झाँसी
२६-३-१९४७

वृन्दावनलाल वर्मा

नाटक के पात्र

पुरुष—

गोकुल

फूलचन्द

हवालदार भीडागम

डाक्टर, पुलिस के सिपाही, रेलयात्री इत्यादि।

स्त्री—

पुनीता

मन्दाकिनी

अन्धी बुढ़िया

नर्स इत्यादि।

बांस की फांस

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्थान—ग्वालियर का रेलवे स्टेशन। समय सन्ध्या के उपरांत। गरमियों के दिन हैं, परन्तु पवन में कुछ ठण्डक आ गई है। प्लेट-फ़ार्म पर अच्छा उजेला है। लोग अपने अपने काम में लगे हैं, कुछ आ-जा रहे हैं। आगरा और झाँसी—भिन्न भिन्न दिशाओं—से आने वाली गाड़ियों का मिलान होना है। टिकिट बट चुके हैं। गाड़ियों के आने में कुछ विलम्ब है, इसलिए यात्री प्लेटफ़ार्म पर प्रतीक्षा में हैं—कुछ दरियों, बक्सों और ज़मीन पर बैठे हैं, कुछ टहल रहे हैं। सामान का तकिया सा बनाए हुए दो विद्यार्थी दरी पर बैठे हुए हैं। दोनों एक उमर के, पुष्ट देह और साधारण आकृति वाले। एक का नाम फूलचन्द है, दूसरे का नाम गोकुल। दोनों एक विद्यार्थी-कान्फ्रेन्स से लौट रहे हैं। विजय-गर्व में हैं, परन्तु कुछ थके हुए से। इनको आगरे की ओर जाना है। पास ही सामान रक्खे हुए एक दरी पर मन्दाकिनी बैठी हुई है। आयु सोलह साल से

ऊपर। नाक कुछ अधिक लम्बी; ओठ कुछ अधिक पतले, चेहरा कुछ अधिक भरा हुआ। वैसे कुरूप नहीं है। लिपस्टिक, रूज, क्रीम इत्यादि ने रूप की त्रुटियों को या तो पूरा कर दिया है, या उनको बढ़ा दिया है। परन्तु मन्दाकिनी के रूप का यह पहलू या वह मन्दाकिनी की भावना पर निर्भर नहीं है, वरन आंख गड़ाकर देखने वालों की भिन्न भिन्न रुचि के ऊपर। वह बहुत आबदार साड़ी पहिने है जिसके आकर्षण में सनकी हुई रुचि को भी कोर-कसर नहीं दिखलाई पड़ती। मन्दाकिनी को स्वयं अपनी साड़ी का, लिपस्टिक इत्यादि से, कहीं अधिक आश्वासन है। थोड़ी ही दूरी पर भीडाराम टहल रहा है। वह सेना में एक छोटा सा अफ़सर है। आयु लगभग तीस साल। लम्बा तड़ङ्गा। मूछें इठीं हुईं। अपनी पल्टन की वर्दी में। वह अवसर पाते ही मन्दाकिनी की ओर टहलते टहलते देखता है। निश्चय नहीं कर पाता कि सौन्दर्य उसमें कहां है। जब कभी उसको ताकते हुए कोई देख लेता है, वह सहमता नहीं है, मन्दाकिनी अवश्य दूसरी ओर देखने लगती है। वैसे मन्दाकिनी को इस प्रकार अपनी आकृति, अपना शृङ्गार और अपनी साड़ी का देखा जाना ज़रा भी नहीं अखरता। मन्दाकिनी की आखें कभी कभी अपने देखने वालों की ओर फिर जाती हैं, परन्तु कान फूलचन्द और गोकुल की बातों पर हैं। इन सबसे उचट कर मन कभी कभी आगरे की दिशा से आने वाली गाड़ी की ओर चला जाता है, क्योंकि उसे झांसी की ओर जाना है। थोड़ी दूर एक तिपाई पर पैर फैलाए हुए पुलिस का एक सिपाही बैठा हुआ है।]

गोकुल—अगली कान्फ्रेंस में गिरधारीलाल को काले झण्डे न दिखलाए तो नाम नहीं। (*मन्दाकिनी की ओर एक निगाह चुराकर*) झण्डों पर लिखा होगा 'गिरधारीलाल लौट जाओ', 'गिरधारीलाल तुम्हारी हमको जरूरत नहीं', 'वापिस जाओ।'

फूलचन्द—इसी कान्फ्रेंस में उसकी किरकिरी तो काफ़ी रही।

गोकुल—वह अब नेता बन गया है। लखनऊ के बहुतसे लफंगों और बनारस के बहुरूपियों को ले आया था, मगर अपने आगरा और इलाहाबाद के पट्ठों ने ढेर कर दिया। अब ज़माना आ गया है कि हम अपना संघ अलग क़ायम करें। *(मन्दाकिनी की ओर देखकर)* लड़कियों को भी उसमें शामिल करना चाहिए। स्त्रियों की स्वाधीनता और समान अधिकार अपना पहला सिद्धान्त है।

फूलचन्द—*(मन्दाकिनी की ओर ज़रा सा देखकर)* सो तो है ही; वह तो है ही। लेकिन काउन्सिल के चुनाव में अबकी बार खास सरगर्मी से काम लेना पड़ेगा। अपनी एक पार्टी बनाकर काउन्सिल की जगहों को मुट्ठी में करना चाहिए और अपने मन का मंत्रिमंडल बनाना चाहिए।

गोकुल—*(हँसकर)* असम्भव तो नहीं है।

फूलचन्द—अजी बिलकुल सम्भव है। ये नेता लोग चुनाव लड़ते तो हम लोगों के ही बूते हैं। हमीं लोगों को वोटरों के पास जाना पड़ता है।

गोकुल—और गालियां भी हमीं लोग खाते हैं। कोई कहता है विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी है। कोई कहता है विद्यार्थी आवारा होते जा रहे हैं। हम लोगों पर धौंस जमाना चाहते हैं।

फूलचन्द—*(फ़ौजी अफ़सर को मन्दाकिनी की ओर कुछ अधिक ध्यान के साथ घूरते हुए देखकर)* देखा इस बदतमीज़ को। बाहर की टीमटाम ऐसी बना रक्खी है जैसे पृथ्वीराज चौहान हो!

गोकुल—भीतर बिलकुल बोदा होगा।

फूलचन्द—*(इधर उधर देखकर)* दो तीन विद्यार्थी और होते तो मैं एक प्रहसन करता।

गोकुल—*(धीरे से)* विद्यार्थिनी तो है।

फूलचन्द—*(धीरे से)* वह अपना कमज़ोर अङ्ग है।

गोकुल—तो हम तुम---दो—क्या कम हैं ? प्लेटफ़ार्म पर और विद्यार्थी न होंगे ? जरूरत पड़ने पर भिड़ों का छत्ता इकट्ठा हो जायगा।

फूलचन्द—(*खड़े होकर, फ़ौजी अफ़सर से*) बैठहु हुइएँ पांव पिराने—आपने महाकवि तुलसीदास का वचन सुना है ?

फ़ौजी अफ़सर—(*अकड़कर*) क्या मतलब ? कौन तुलसीदास ?

फूलचन्द—हां...हां...माफ़ कीजिए। आपको तुलसीदास या किसी कवि से क्या मतलब ? पैर दर्द करने लगे होंगे, आइए, बैठिए न ?

(*गोकुल हँसता है*)

फ़ौजी अफ़सर—(*ज़रा झेंपकर*) गाड़ी कमबख्त इतनी लेट है कि समझ में ही नहीं आता, टहलने के सिवाय और क्या करूँ।

गोकुल—यहां आइए, कुछ बात ही करेंगे। आखिर हम लोगों को भी तो जाना है। आप कहां जा रहे हैं ?

फ़ौजी अफ़सर—दिल्ली।

फूलचन्द—भाई वाह ! क्या खूब रही !! हम लोग भी उसी दिशा में जा रहे हैं। आइए, बैठिए।

(*फ़ौजी अफ़सर विद्यार्थियों की दरी को अधिक सुविधा का स्थान समझकर आ बैठता है। वह इस तरह बैठता है कि सहज ही मन्दाकिनी को बार बार देख सके। मन्दाकिनी अपना मुँह थोड़ा सा दूसरी दिशा में फेर लेती है।*)

फूलचन्द—आप फ़ौज में कोई अफ़सर हैं ?

फ़ौजी अफसर—हां, मैं हवालदार मेजर हूँ।

गोकुल—आपने तो लड़ाई भी लड़ी होगी ?

फ़ौजी अफ़सर—कई लड़ी हैं। घायल भी हुआ हूं।

फूलचन्द—आपका नाम ?

फ़ौजी अफ़सर—हवलदार मेजर भीडाराम।

गोकुल—(हँसी को दबाकर) जैसा आपका नाम है वैसा गुण भी है। आप बहुत भिड़े हैं। आपको डर तो किसी बात का लगता न होगा?

फ़ौजी अफ़सर—(मुस्कराकर, मन्दाकिनी की ओर देखते हुए) डर का क्या काम जी?

फूलचन्द—आपने रामायण का नाम सुना है?

भीडाराम—हां जी। वह राम लच्छमन और रावण वाली न?

गोकुल—हां हां वही जी, वही। तुलसीदास की ही लिखी तो वह रामायण है।

भीडाराम—(हँसकर) हां जी उस तुलसीदास का तो नाम सुना है। रामायण कभी कभी सुनी तो है, पर पढ़ने का वक्त नहीं मिला। मिला ही नहीं काम के मारे।

गोकुल—आपको तुलसीदास का नाम खूब याद रहा!

(मन्दाकिनी मुस्कराती है)

भीडाराम—(हँसकर) हां जी। हमको याद तो बहुत रहता है। तुलसीदास नाम का एक सिपाही जो हमारे बेड़े में था। याद क्यों न रखता?

फूलचन्द—भाई वाह! भाई वाह!! (हँसता है)

भीडाराम—वह हमारी साइकिल में फूंको मारा करता था।

गोकुल और फूलचन्द—(दोनों हँसते हुए) ओफ़ हो! ओफ़ हो!!

भीडाराम—(रोब के साथ) हम आपको फ़ौजी ज़िन्दगी की इतनी बातें सुना सकते हैं कि खुशी के मारे आपका दम फूल जायगा।

गोकुल—ज़रूर ज़रूर। एक के ही मारे तो पेट आधा भर गया।

भीडाराम—हम विलायतों में गए हैं। पूरब, पच्छिम और ईरान में भी रहे हैं। बाबू, वहां के लोग बुलबुल से बहुत घबराते हैं।

(मन्दाकिनी हँसी के मारे मुँह दाब लेती है)

फूलचन्द—*(कुतूहल दिखलाता हुआ)* बुलबुलों से घबराते हैं या गुलाब और बुलबुल को प्यार करते हैं?

भीडाराम—*(आश्चर्य के साथ)* ओ बाबू! वे लोग भी कविता करते हैं और बुलबुलों से डरने की बातें कहते हैं। हम हिन्दुस्तानी सिपाही सोचते थे, क्या ईरान की बुलबुल में कोई ज़हर होता है? *(मन्दाकिनी की हँसी–मुस्कराहट से प्रोत्साहन पाकर)* पर अपने देश की भी बुलबुल ज़हरीली हो सकती है।

(मन्दाकिनी की मुस्कराहट बन्द हो जाती है। गोकुल और फूलचन्द के मन में क्षोभ आता है, परन्तु वे ऊपर ऊपर मुस्कराहट बनाए रखते हैं।)

गोकुल—इलाहाबाद में एक पल्टन थी। उसमें हमारी जानपहिचान का एक हवालदार था—नाम था भोंदूराम।

फूलचन्द—*(हँसकर)* हां हां यही नाम था—हवालदार—मेजर भोंदूराम।

(भीडाराम व्यङ्ग को समझ जाता है। उसको क्रोध आता है। परन्तु उन दोनों के पुष्ट शरीरोंको देखकर आत्मदमन कर लेता है।)

भीडाराम—आप लोग कौन-सा स्टेशन उतरेंगे?

गोकुल—जहां भगवान पहुंचादें।

फूलचन्द—कह तो दिया था उसी तरफ जारहे हैं जिस तरफ आप।

(भीडाराम और भी क्रुद्ध होता है, परन्तु उसकी समझ में नहीं आता है कि क्या उत्तर दे। वह दूसरी ओर देखने लगता है—मानो गाड़ी के आने की बाट जोह रहा हो।)

गोकुल—(*मन्दाकिनी की ओर देखकर, एक हाथ की गदेली पर दूसरे हाथ की टेहुनी रखकर उस हाथ को सांप के फन की तरह हिलाते हुए, फूलचन्द से*) उस हवालदार मेजर के डेढ़ डेढ़ बलिश्त की मूछें थीं और दाढ़ी यों लहराती थी।

(*मन्दाकिनी हँसती है*)

भोंडाराम—बाबू हम सिपाही हैं। याद रखना।

गोकुल—हम देश के चमत्कार, आगे की पीढ़ी के नेता और मिडों के छत्ते कालेज के विद्यार्थी हैं—

फूलचन्द—और हम सरीखे कमसे कम दर्जनों और इसी प्लेटफ़ार्म पर मटरगश्त में मस्त हैं।

भोंडाराम—तो आप हमसे लड़ना चाहते हैं ?

गोकुल—सवाल यह नहीं है—सवाल है, क्या आप हमसे लड़ जाना चाहते हैं ?

(*पुलिस का सिपाही उठकर आता है*)

सिपाही—अजी हवालदार मेजर साहब, आप अपना काम देखिए। ये कालेज के लड़के हैं। इनसे मत उलझिए।

भोंडाराम—(*खड़े होकर*) तो क्या हम दब जायं ? अपनी वर्दी की बेइज़्ज़ती करवायं ?

सिपाही—(*पीछे हटता हुआ*) तो होने दीजिए। मुझे क्या पड़ी जो इस समय रोक टोक करूँ ? ज़रा कुछ और हो तब सीटी पर हाथ डालूँगा।

(*हल्ला सुनकर कुछ लड़के आ जाते हैं*)

कुछ—क्या है ?

कुछ और—क्या बात है ?

(*मन्दाकिनी भी खड़ी हो जाती है*)

गोकुल—कुछ नहीं भाई। हवालदार जी को अपनी मूँछों की बड़ी ऐंठ है। मैंने कहा हमारे इलाहाबाद में भी एक हवालदार मेजर हैं जिन का नाम है भोंदूराम और जिनकी दाढ़ी इस तरह फहराती है। *(हाथ को उसी प्रकार हिलाकर दिखलाता है)* समस्या की पूर्ति न करके बिगड़ गए हवालदार जी।

(भीडाराम बढ़ती हुई भीड़ में अपनी कुशल न देखकर बड़-बड़ाता हुआ हट जाता है।)

एक लड़का—हवालदार भोंदूराम और हवालदार भेड़राम—या क्या—एक ही थाल के दाने निकले!

दूसरा—*(साँप के फन की तरह हाथ हिलाकर)* पर दाढ़ी ऐसी नहीं है।

तीसरा—लू लू है!

फूलचन्द—है कुछ लड़ने-बड़ने का हौसला हवालदार जी?

(हवालदार जलती आँखों से देखता हुआ अपनी गठरी पुठरी उठाकर दूसरे कोने पर जाता है)

बहुत से—वह भागा! वह भागा!!

(फूलचन्द मन्दाकिनी के पास जाता है)

फूलचन्द—आपको कोई कष्ट तो नहीं है? आप कुछ थकी सी जान पड़ती हैं।

मन्दाकिनी—*(भयभीत होकर)* नहीं तो।

(फूलचन्द उसके पास से हट आता है)

गोकुल—*(फूलचन्द से धीरे से)* अकेले में क्या बात कर आया?

फूलचन्द—*(धीरे से)* ठहर भी जा ज़रा। फिर सुनाऊँगा। वह मुझको चाहती है।

(लड़के टुकड़ियों में बिखर जाते हैं)

गोकुल—अरे यार मुझको भी कोई चाहे ।

फूलचन्द—भगवान जब देते हैं तो छप्पर फाड़ कर देते हैं ।

[एक अन्धी बुढ़िया, बगल में पोटली दबाए और लाठी लिए हुए अपनी लड़की पुनीता के साथ आती है जिसको वह पुनियां कहती है । पुनीता या पुनियां चौदह वर्ष की अतीव सुन्दर लड़की है । हाथ में काँच की दो दो तीन तीन चूड़ियां, फटे कपड़े तन पर, रूखे केश, पैर नंगे । उसकी आँखों में चमक और ओठों पर अवहेला है । वे दोनों भिखारिनी हैं । भीड़ के निकट आते ही गाती हैं ।]

(अंधी बुढ़िया और पुनीता का गायन)

मनका चेत न खोने दे तू,
जग का हित मत सोने दे तू,
तब हरियाली छाएगी,
फूलों से लद जाएगी,
लदी रहेगी, फली रहेगी, जगी रहेगी ।

गोकुल—(*पुनीता की ओर पैसे बढ़ाकर*) तुमने बहुत अच्छा गाया । बहुत सुन्दर और मोहक ।

पुनीता—(*उसकी आंखों में कृतज्ञता नहीं है, समझती है गाने की मज़दूरी मिली, परन्तु ओठों पर सहज सरल मुस्कराहट है । तो भी, कृतज्ञता प्रदर्शन करते हुए*) जय हो आपकी । धन्य हो ।

(और लोग भी उसको पैसे देते हैं । मन्दाकिनी अपने आसन पर से उसकी ओर हाथ बढ़ाती है । पुनीता उसके पास जाती है और पैसे लेकर उसको सिरसे पैर तक देखती है ।)

पुनीता—(*आंखों में ढिठाई और ओठों पर विनय के साथ*) आप बड़ी हैं । समर्थ हैं कुछ और दीजिए ।

मन्दाकिनी—(*पुनीता के स्वाभाविक गौ दर्प से कुढ़कर, परन्तु उसके फटे कपड़ों और हीन दशा पर दया का भाव दिखलाते हुए*) खैर, लो। (*पैसा देती है*) जाओ तंग मत करो। तुम लोग प्लेटफ़ार्म पर भी पीछा नहीं छोड़तीं!

बुढ़िया—माई, हम गरीब हैं। हमारे ऊपर दया करो। आपको पुण्य मिलेगा। आपके बच्चे सुखी रहें।

(*मन्दाकिनी शर्माती है। गोकुल फूलचन्द की बग़ल में धीरे से कुहनी टेकता है और मुस्कराता है। मन्दाकिनी देखकर मुँह फेर लेती है। पुनीता आंखों से तिरस्कार सा उड़ेलकर चलने को होती है*)

गोकुल—इतने पैसे मिल गए तुम्हारा जी नहीं अघाया? (*आँख दाबकर और मुस्कराकर*) लो मैं और देता हूँ।

पुनीता—(*तिरस्कार के स्वर में*) मुझको नहीं चाहिए। रक्खे रहो अपने पैसे। देना अपनी मां बहिन को। हम भीक मांगती हैं तो क्या हमारी कोई इज्ज़त नहीं? आंख मारता है गुन्डा!

गोकुल—(*क्षोभ को दबाते हुए*) ओ हो! यह शान!! घरमें नहीं हैं दाने अम्मां चलीं भुनानें!!! कुछ गालेती हैं उसका इतना घमंड!!!! (*मन्दाकिनी की ओर देखकर*) वैसे कोई अधेला भी न देता।

बुढ़िया—क्या है बेटी? कौन हैं ये? चल आगे चल। गाड़ी के आने में अभी कितनी देर है?

पुनीता—(*तनकर*) है किसी स्कूल का लफंगा।

गोकुल—(*क्रुद्ध स्वर में*) हट यहां से अभागिन! स्त्री जाति है नहीं तो एक चांटे में होश ठीक कर देता। चिथड़याऊ छोकरी कहीं की!!

पुनीता—आ, मार मुझे। बड़ा मर्द बना फिरता है। हाथ उठाया तो खून पी जाऊँगी।

(*पुलिस का सिपाही बेंच पर से उठकर आता है*)

सिपाही—निकलो यहां से। ये डायनें इतनी ढीट और लड़ाकू हो गई हैं कि जिसका ठिकाना नहीं।

पुनीता—क्यों निकलें? हमारे पास टिकट है।

सिपाही—अच्छा! तुम्हारे पास टिकट है!! नरक का टिकट होगा!!! (*हँसता है*) गरीब जानकर हम तुम लोगों को इस जगह भीख मांगने के लिए चला आने देते हैं। उसका नतीजा यह है कि तुम इतनी निडर हो गईं और भले आदमियों तक को गालियां देने लगीं?

पुनीता—(*रुआसे स्वर में*) यह भला आदमी है। यह···यह··· यह जो आंख मारता है!

सिपाही—(*हँसता हुआ*) अच्छा, अच्छा, लक्ष्मी जा यहां से। आंख मारते हैं तो हाथ तो नहीं मारते।

(*सब हँस पड़ते हैं। मन्दाकिनी मुँह फेर लेती है। क्रोध और क्लेश के मारे पुनीता के आँसू निकल पड़ते हैं।*)

पुनीता—(*रुद्ध कंठ से*) चलो मां। दूसरी तरफ़ चलें।

सिपाही—(*आत्मगौरव के साथ*) कहां जा रही हो? सचमुच तुम्हारे पास टिकट है।

बुढ़िया—हां दीनबन्धु, हमारे पास टिकट हैं। हम लोग झांसी जा रहे हैं।

सिपाही—वहां से क्यों जा रही हो? यहां तो काफ़ी पैसे मिल जाते हैं। पुनियां अच्छा गाती है। इसमें सिर्फ़ एक ऐब है—इसकी नाक पर गुस्सा बैठा रहता है। किसी से भी अच्छी तरह नहीं बोलती है। कभी कभी ऐसा लगता है जैसे चबाए डालती हो। (*मुस्कराकर*) वैसे गाती अच्छा है।

पुनीता—(*रुष्ट स्वर में*) चलो मां उस ओर चलें, जहां भले मानस बैठे होंगे।

बुढ़िया—(*पुनीता के साथ दूसरी ओर जाते हुए*) बेटी, सब जगह ऐसे ही ऐसे हैं। पर तेरी जीभ न जाने क्यों कभी कभी कांटे बिछा डालती है।

(*वे दोनों दूसरी ओर चली जाती हैं*)

गोकुल—(*सिपाही से*) इन भिखमङ्गों को प्लेटफ़ार्म पर नहीं आने देना चाहिए। (*तुरन्त पसीजकर*) परन्तु बिचारे करें क्या ?

सिपाही—उसके पास टिकट था।

फूलचन्द—शायद बहाना कर रही हो।

मन्दाकिनी—(*गला साफ़ करके*) भिखमङ्गों में इतनी हेकड़ी तो नहीं देखी।

फूलचन्द—जी हां, आप ठीक कह रही हैं। कुछ पागल सी जान पड़ती है। काफ़ी उजड्ड।

सिपाही—(*तिपाई पर बैठने के लिए जाते जाते*) पागल तो नहीं है। भिखारिन समझकर लोग उसके साथ छेड़छाड़ करते हैं इसलिए बचने के लिए वह ऊलजलूल बक उठती है।

(*सिपाही तिपाई पर बैठ जाता है और पुनीता के गाए हुए गीत की एक कड़ी को बेसुरा गुनगुनाने लगता है।*)

मन्दाकिनी—(*कान लगाकर*) जान पड़ता है गाड़ी आई।

फूलचन्द—(*कान लगाकर*) मालूम तो होता है। आपका कान बहुत अच्छा है।

गोकुल—(*मुस्कराकर धीरे से*) अवश्य।

(*रेल की सीटी और भरभराहट का शब्द सुनाई पड़ता है। उसी समय प्लेटफ़ार्म पर चहल पहल रौरा और बेहद दौड़धूप मच जाती है। मन्दाकिनी परेशान हो जाती है*)

मन्दाकिनी—(*घबराकर*) कुली न जाने कहां चला गया ?

फूलचन्द—आपका बहुत थोड़ा सा सामान है—मैं पहुचाए देता हूँ। आप परेशान न हों।

(*मंदाकिनी सहमती है*)

मन्दाकिनी—आपकी कृपा। परन्तु कुली आता ही होगा।

(*रेल की भरभराहट अधिक स्पष्ट सुनाई पड़ती है*)

गोकुल—मैं यहां सामान रखाए हूँ। तुम तब तक देवी जी का आराम के साथ बिठला आओ। जल्दी करो, फूलचन्द। गाड़ी शायद इस प्लेटफ़ार्म पर नहीं आ रही है !

(*कुछ लोग बेतहाशा दौड़ते हुए आते हैं*)

एक—गाड़ी परले प्लेटफ़ार्म पर आ रही है। धोखा हो गया ! हाय राम, बड़ी आफ़त हुई !!

(*जाता है*)

दूसरा—स्टेशन के सब बाबू गधे हैं। इन्होंने पहले से नहीं बतलाया कि गाड़ी कहां खड़ी होगी।

(*जाता है*)

तीसरा—इन्हें जनता को हैरान करने में मज़ा आता है।

(*जाता है*)

चौथा—इन दुष्टों को काली माई खाए !

(*जाता है*)

(*फूलचंद मंदाकिनी के सामान को बाँधने में सहायता देता है*)

गोकुल—जल्दी जाओ, फूलचन्द। गाड़ी आ गई। जगह मिलने में बड़ी दिक़्क़त होती है। आराम के साथ बिठलाकर आना। कितना गुल-गपाड़ा है ! संयम की कितनी कमी है !!

[गोकुल के मुँह से 'संयम की कमी' की बात सुनकर मंदाकिनी मुस्कराती है। फूलचंद सामान लादकर जाता है। मंदाकिनी जाते हुए, गोकुल से नमस्ते करती है। मंदाकिनी और फूलचंद जाते हैं। नेपथ्य में सवारियों के चढ़ने उतरने का बहुत शोर होता है। जहाँ गोकुल है वहां भीड़ नहीं के बराबर हो जाती है। सिपाही तिपाई पर बैठा है।]

गोकुल—*(अपने आसन से ही)* क्यों जी, यह क्या ? स्टेशन वालों ने पहले से सूचना नहीं दी कि इस प्लेटफ़ार्म पर गाड़ी नहीं आवेगी ?

सिपाही—जो कुछ भी हो। कोई कारण होगा।

गोकुल—आगरे की ओर जाने वाले लोग गाड़ी को कहां पावेंगे ? वे सब कहां चले गए ?

सिपाही—लम्बा प्लेटफ़ार्म है। इधर उधर होंगे या उस गाड़ी पर किसी की देखभाल के लिए गए होंगे। मुझको मालूम नहीं है।

[व्यङ्ग पर गोकुल को रोष नहीं आता। वह पूर्व दिशा की ओर देखने लगता है जहाँ से आगरे को जाने वाली गाड़ी आयगी। उस दिशा से हवालदार भीडाराम अपना सामान लिए हुए आता है। गोकुल को अच्छा नहीं लगता। भीडाराम उसके निकट अपना बिस्तर रख लेता है।]

गोकुल—*(पिछले अपराध के प्रायश्चित करने के अभिप्राय को साहस की ढिठाई से ढकते हुए)* हवालदार साहब, अब अपनी गाड़ी भी आती ही होगी।

भीडाराम—*(उपेक्षा के साथ)* हूं—ऊँ। *(आँखें तरेरकर)* तुम्हारे साथी कहां गए ?

गोकुल—*(खिसकते हुए धीरज को बटोरते हुए)* इधर उधर हैं। आते होंगे। गाड़ी क्या देर से आ रही है ?

भीडाराम—हां, लेट है। गाड़ियों का मिलान यहां न होगा। समय है। बातचीत करने के लिए चला आया हूँ। मेरे बेड़े के भी कुछ लोग

उधर हैं। जल्दी इकट्ठे हो जायँगे। तुम्हारा साथी कहां गया? बुला लो न उसे?

पुलिस का सिपाही—जाने दीजिए हवालदार जी। ये लोग लड़के हैं। दुनिया को नहीं चीन्हते।

भीडाराम—न दीन को और न दुनिया को। इनको महज़ लड़का कहते हैं? ये लड़के हैं? ये जवान हैं। घर गिरस्ती संभालने लायक़। पर इतने बेहूदे और बेतमीज़ कि हद नहीं। रास्ता चलने वालों को ये टाकें! हर किसी के साथ छेड़छाड़ ये करें!! औरतों के साथ इशारेबाज़ी करें, उनको आंख मारें, कभी कभी उनसे टकरा तक जायं!!! खींचें लूटें!!!! घुसकर और मुफ्त में तमाशे देखें!!!!!......

गोकुल—(*सिट्टीसी भूलकर*) हम लोगों ने—मैंने—आपके साथ तो कोई बुरा सलूक नहीं किया, हवालदार जी!

भीडाराम—इलाहाबाद वाले उस हवालदार की दाढ़ी किस तरह लहराती है? हां—इस तरह? बतलाओ न ज़रा अब? मैं अपना चांटा लहरा दूँ तो तुम्हारे पेट की दाढ़ी बाहर निकल पड़े।

गोकुल—(*इधर उधर देखकर और अपने को अकेला पाकर, सहमते हुए*) मैंने तो कुछ नहीं कहा था हवालदार साहब। गलती हो गई हो तो माफ़ कीजिएगा।

भीडाराम—(*और भी अकड़कर*) तुम लोग यह भूल गए थे कि मैं सिपाही हू और मरना मारना बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। (*जिस दिशा से आया है उस ओर देखते हुए*) मेरे बेड़े के भी बहुत से लोग मौजूद हैं। परन्तु मैं उनको यहां नहीं लिवा लाया हूँ। इशारा पाते ही आ सकते हैं। देखूं तुम्हारे सैकड़ों लड़के वे कहां हैं जो बन्दरों की तरह कुछ देर पहले इकट्ठे हो गए थे!

गोकुल—मैंने तो उनको बुलाया न था।

भीडाराम—अब कितनी म्याऊं म्याऊं कर उठे हो। उस समय कैसे दहाड़ रहे थे ! कितना उछल कूद रहे थे !! देखता हूँ तुम्हारा पुरुषार्थ !!!

(पुलिस का सिपाही निकट आता है)

सिपाही—हवालदार साहब, यह तो लड़कों की प्रकृति ही ठहरी। जब यह बहुत से इकट्ठे हो जाते हैं तब हिम्मत, ताक़त और चतुराई में ये अपने से बढ़कर संसार में किसी को भी नहीं मानते। अकेले दुकेले रह जाने पर ये भेड़ बकरी से भी गए बीते हो जाते हैं ......

भीडाराम—कोई डिस्पिलिन नहीं ! कोई अदब नहीं !! इस पर भी कहते हैं—क्या कहते हैं ? *(माथा टटोलकर)* हां—हम देश के चकमक, नहीं चमत्कार हैं ! आगे की पीढ़ी के नेता !! भिड़ों के छत्ते !!! अब देखो भिड़ों का हम कैसा इलाज करते हैं। डङ्क निकाल डाला और मसल कर फेंक दिया।

सिपाही—*(विनय पूर्वक)* जाने भी दीजिए हवालदार साहब। आप फ़ौजी हैं, आप में डिस्पिलिन है। आप दुनियां देखे हुए हैं, इनको अभी संसार की ठोकरें खानी हैं। ठोकरें खाकर ठीक हो जायंगे।

भीडाराम—*(ठण्डा होकर)* मैं ही क्यों न शुरू करदूँ ?

सिपाही—*(हटता हुआ)* जैसी आपकी मर्ज़ी, मुझको क्या करना है। मैं भी कुछ इन्तज़ाम करलूं।

(तिपाई भीतर रखकर जाता है)

गोकुल—मैं क्षमा चाहता हूं।

भीडाराम—*(कुछ संतुष्ट होकर)* मैं तुमको सताना नहीं चाहता, लेकिन यह बतला कर जाना चाहता हूँ कि हमारे बेड़े के बहुत से सिपाही उछले कोने पर हर तरह का फ़साद करने को तैयार हैं। खैर मनाओ।

गोकुल—(*इधर उधर देखकर और किसी विद्यार्थी को न पाकर*) आप सूरमा हैं और मैं आपके सामने निरा बालक हूँ। आप देश के जौहर हैं।

भीडाराम—वही कहो न जो पहले कह रहे थे। (*ज़रा पास आकर*) फिर किसी सिपाही से उस तरह की बात कहोगे?

गोकुल—(*स्वाभिमान को फिर से पाता हुआ*) देखिए हवालदार मेजर साहब, मैंने आपसे क्षमा मांगली है और आपके साथ इस तरह का सलूक कभी न होगा यह तै है, परन्तु आप दुनियां भर के सिपाहियों के प्रतिनिधि तो हैं नहीं? कोई सिपाही बहुत शिष्ट होते हैं और कोई बहुत अशिष्ट।

भीडाराम—(*गोकुल के स्वाभिमान के मुक़ाबिले में अपने भीतर नैतिक साहस की कमी पाकर*) मैंने तुम्हारे साथ कौनसा बुरा बर्ताव किया था जो तुमने मेरा अपमान किया?

गोकुल—माफ़ी तो मांग ली मैंने।

भीडाराम—पर तुम्हारे साथियों ने लूलू की थी। क्यों की थी?

गोकुल—मैंने तो नहीं की थी, हवालदार साहब। आप इतने समझदार होकर भी याद नहीं कर रहे हैं!

भीडाराम—(*समझदारी और स्मरणशक्ति को एक ही बात समझकर*) मुझको याद है, मैं भूला नहीं हूँ। तुमने कुछ नहीं बका था।

गोकुल—आपको बिलकुल ठीक याद है, मैंने उस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा था।

भीडाराम—(*और भी ढलकर*) हां यह ठीक है। पर वे सब इतने इकट्ठे कैसे हो गए यहाँ?

गोकुल—मैं क्या कह सकता हूँ हवालदार मेजर साहब। आपको खुद सब याद है।

भीडाराम--मैं कभी कोई बात नहीं भूलता। अभ्यास है। अगर सिपाही बातों को भूलने लगे तो सारी पल्टन को अपनी एक भूल से ग़ारत कर दे। लड़ाई के समय हिदायत को भूल जाना गोली की सज़ा खाने का न्योता देती है। एक लड़के ने कहा था, 'है कुछ लड़ने-वड़ने का हौसला हवालदार जी?' वह कहां गया? इस गाड़ी से झाँसी चला गया क्या?

गोकुल--(*दूसरे प्लेटफ़ार्म पर दृष्टि डालकर और फूलचन्द के न आने की मनाते हुए*) कौन लड़का?

भीडाराम—था एक। वह दिखलाई पड़ जाता तो कहता 'आजा, अब आजा; देखले मेरे झपट्टा!' परन्तु वह चला ही गया।

गोकुल—मेरे ख्याल में वह झाँसी जाने वाली गाड़ी के किसी डिब्बे में बैठ गया होगा। आपको उस गाड़ी की भीड़ में शायद ही मिले।

भीडाराम—मिल जाता तो मैं उसका सिर अपनी चुटकी से मसल डालता।

गोकुल—ज़रूर हवालदार जी। वह तो चला गया, पर मैं उसकी तरफ़ से क्षमा मांगता हूं।

भीडाराम—क्यों? तुम क्या सब लड़कों के ज़िम्मेदार हो?

गोकुल—सो तो नहीं हूँ। (*हवालदार को ठण्डा पाकर*) आप मेरी बात को तो भुला देंगे?

भीडाराम—हां, तुमने माफ़ी मांग ली है। तुम्हारी बात को और तुमको भी भुला दूंगा। अच्छा, आगे ऐसा मत करना।

(*जाने को होता है*)

गोकुल—नमस्ते हवालदार मेजर जी।

भीडाराम—(*लौटकर*) नमस्ते, नमस्ते। (*सोचकर*) मैं एक बात पूछता हूं—इलाहाबाद में क्या सचमुच भोंदूराम नाम का कोई हवालदार मेजर है? अगर है तो उसकी पल्टन का क्या नम्बर है?

गोकुल—(*मुस्कराहट को सयत्न दबाकर*) पल्टन का नम्बर तो याद नहीं हवालदार जी। पल्टनों की प्रायः अदली-बदली होती रहती है। नाम उनका वही है जो अभी अभी आपने लिया।

भीडाराम—(*सोचता हुआ*) नाम नहीं भूलूँगा। कभी मिलेगा तो उससे कहूँगा लम्बी दाढ़ी मत रख, अब उसका रिवाज़ नहीं रहा।

गोकुल—अवश्य, अवश्य। मुझको मिले तो मैं भी उनको यही सलाह दूंगा, पर कहीं वे बुरा न मान जायँ ?

भीडाराम—(*हँसकर*) नहीं जी, सिपाही बुरा नहीं मानता। सिपाही मरना-मारना जानता है, माफ़ी देना जानता है। नहीं जानता है तो किसी बतलाई हुई बात का भूलना। अच्छा।

(*भीडाराम जाता है। नेपथ्य में गाड़ी छूटने की सीटी बजती है भरभराहट होती है। एक ओर से फूलचन्द आता है।*)

फूलचन्द—गोकुल, ये थोड़े से पल कैसे मधुर और कैसे मदिर बीते हैं—जैसे गगन की गङ्गा ने मधुका प्लावन कर दिया हो।

गोकुल—(*अनमनेपन को दबाते हुए*) हां, तुम्हारे लिए कविता स्वाभाविक ही है। कुछ बातचीत हुई ?

फूलचन्द—हां, बहुत। उसने जीवन के निर्झर को मुक्त सा कर दिया। जी चाहता है कि पृथिवी की सुगन्धियों, ओस के मोतियों, पवन की झकझोरों, आकाश की झिलमिलों और जल की रङ्गीनियों तथा चञ्चलताओं पर कुछ लिख डालूं।

गोकुल—(*रुखाई को दबाकर*) नाम, ग्राम, पता बता भी मालूम हुआ उसका कुछ या यों ही कविता करने चल उठे ?

फूलचन्द—नाम मन्दाकिनी है। गांव का पता तो नहीं पूछ पाया, और सब मालूम हो गया है। कभी हम लोग मिलेंगे। कितनी सुन्दर है वह, गोकुल। और, कितनी भाव वाली। उसकी आंख······

गोकुल—हां—कुछ है।

फूलचन्द—कुछ है ! उसकी नाक ... ..

गोकुल—ज़रूरत से ज़्यादा लम्बी है।

फूलचन्द—ओठ कितने पतले... ..

गोकुल—कागज़ जैसे--

फूलचन्द—चेहरा पूर्णिमा के चन्द्रमा सदृश्य।

गोकुल—सवाई पूनों जैसा--इतना फूला हुआ कि गुलाई को काफ़ी लांघ गया है।

फूलचन्द—(*कुछ तेज़ होकर*) तुमको क्या हो गया है आज ? इतने उचटे उचटे, इतने बहके बहके क्यों बोल रहे हो ?

गोकुल—(*हवालदार के साथ बीती हुई का स्मरण करते हुए*) गाड़ी की प्रतीक्षा करते करते और अकेले बैठे बैठे मन ऊब गया है। और कोई बात नहीं।

फूलचन्द—उसी डिब्बे में वह अन्धी बुढ़िया और उसकी लड़की भी बैठी थी।

गोकुल—(*झटका सा खाकर*) एँ !......

फूलचन्द—हां वे दोनों उसी डिब्बे में थीं। वह लड़की आँख गड़ा-गड़ाकर देख रही थी। मानो कुछ पैसे चाहती हो। सूखे पत्तों से ढकी गुलाब की कली।

गोकुल—वह बहुत मुँहज़ोर थी। परन्तु थोड़ी सी पढ़ी लिखी होती तो.....

फूलचन्द—(*हँसकर*) तो तुम बिना किसी दान दहेज़ के उसके साथ ब्याह कर लेते ! ठीक है न ?

गोकुल—(*चिढ़कर*) कर लेता ! हुं··। वह भिखारिन होते हुए भी कितनी दृढ़ और कितनी निडर थी। परन्तु हद से बाहर ढीठ हो जाने के कारण वह किसी भी भले आदमी के साथ ब्याहे जाने योग्य नहीं है।

फूलचन्द—परन्तु उसका सौन्दर्य ? चिथड़ों में न होती, और आज-कल का थोड़ा सा शृंगार किए होती तो उसको अप्सरा कहने में कोई संकोच न होता।

गोकुल—होगी। मुझको तो गाड़ी की प्रतीक्षा करते करते इतना आलस्य आ गया है कि किसी भी प्रकार के सौन्दर्य की ओर मन नहीं जाना चाहता।

फूलचन्द—(*अनसुनी करके*) उसकी आंखों के विशाल सौन्दर्य में कोई सन्देह नहीं। उसकी भौंहें, पलकें, बरोनियां······

गोकुल—सब उसकी ढिठाई और बेहयाई में दब गईं।

फूलचन्द—भाई ज्यादती मत करो। न्याय की बात यह है कि तुमने उसको आंख मारी, उसने फुफकार। और, एक दो गालियां दे दीं। शायद वह कंजड़ी थी।

गोकुल—नहीं थी—और शायद हो। क्या मतलब ? मेरे मन में उससे फिर मिलने की कोई साध नहीं है। शायद ही कोई लड़की इतनी फूहड़ हो।

फूलचन्द—मन्दाकिनी में और उस लड़की में आकाश पाताल का अन्तर है।

गोकुल—हां, हर बात में। (*गाड़ी की प्रतीक्षा में मुँह फेर लेता है*)

(*एक ओर से पुलिस का सिपाही कई कांस्टेबिलों के साथ आता है*)

सिपाही—यहां तो सब कुशलक्षेम है।

फूलचन्द—क्यों ? क्या बात है ? क्या कोई दङ्गा होने वाला था ?

सिपाही—आपके साथी ने नहीं बतलाया ? हवालदार झगड़ा करने को आया था—वह जिसको आपने चिढ़ाया था।

फूलचन्द—तो वह क्या कर सकता था ?

सिपाही—उसने अपना बेड़ा तैयार कर लिया था। दङ्गा होता और खूनखच्चर। कैसे मान गया वह ?

गोकुल—चला गया।

सिपाही—वैसे ही ? हां, मुझको याद आ गया। आपने उससे माफ़ी मांग ली थी। वह ठण्डा तो मेरे सामने ही पड़ गया था। परन्तु, डर था कहीं आग फिर न सुलग उठे।

फूलचन्द—क्या बात थी गोकुल ? तुमने बतलाया नहीं ?

गोकुल—कुछ नहीं। वह आया। ज़रा बतबढ़ियाव हुआ। मैंने उसको ठण्डा कर दिया। वह चला गया।

सिपाही—*(उत्साह के साथ)* बाबू, मैंने बीच-बचाव कर दिया वरना वह ज़रूर धौलधप करता। ये बिचारे अकेले थे। कोई भी और लड़के आसपास न थे। होते भी तो वे लोग भी बहुत थे, आ जाते और दङ्गा हो जाता। *(गोकुल चुप रहता है)*

फूलचन्द—आपने बहुत अच्छा किया। अब तो दंगे की कोई आशङ्का नहीं है ?

गोकुल—अरे नहीं। वह तो सब उसी समय ठण्डा हो गया।

सिपाही—और यदि दङ्गा हुआ होता तो हम लोग दूर नहीं थे।

(गेरुआ वस्त्र और किरमिच का जूता पहिने, डण्डा झोला लिए एक साधू आता है। सिपाही जाते हैं। साधू फूलचन्द और गोकुल के पास आकर खड़ा हो जाता है)

साधू—गाड़ी के आने में कितनी देर है बाबू ?

फूलचन्द—कुछ नहीं कहा जा सकता। आप कहां जा रहे हैं ?

साधू—आगरा। वहां कल साधुओं का सम्मेलन है।

गोकुल—बैठिए। हम लोग भी उस ओर जा रहे हैं।

साधू—नारायण। नारायण। (*बैठ जाता है*) आप लोग क्या करते हैं ?

दोनों—पढ़ते हैं।

साधू—बड़ी प्रसन्नता की बात है। कुछ समाज और देश का भी काम करते हो ?

फूलचन्द—जी हां। हम लोग एक विद्यार्थी-सम्मेलन से लौट रहे हैं।

साधू—सम्मेलन तो केवल साधुओं का होना चाहिए। वे ही समाज को सच्ची सलाह दे सकते हैं। गृहस्थी और मोक्ष—दोनों—का मार्ग वे ही बतला सकते हैं।

गोकुल—साधुओं को भी वर्तमान में जो कुछ अच्छा है उसको सीखना और अपनाना चाहिए।

साधू—(*हँसकर*) वर्तमान में जो कुछ अच्छा है वह प्राचीन का जूठन ही तो है।

गोकुल—(*सजगता प्राप्त करके*) तो प्राचीन में जो कुछ बुरा था वह कहां से आया, महाराज ?

साधू—(*मुस्कराकर*) प्राचीन में बुरा कुछ था ही नहीं।

गोकुल—तो मध्य और वर्तमान में इतनी बुराइयां कहां से आगईं ?

साधू—बाहर से। सब बाहर से आईं।

फूलचन्द— मुझको तो प्राचीन में भी, अनेक महान गुण होते हुए भी, कुछ ऐसे भयङ्कर दोष नज़र आते हैं कि माथा नीचा पड़ जाता है।

साधू—जैसे—जैसे ? बतलाइए एकाध।

गोकुल—जैसे छुआछूत और सती हो जाने की प्रथा।

साधू—(हँसकर) अभी आप बच्चे हैं। प्राचीन का महत्व समझने के लिए बहुत सोचना समझना पड़ेगा।

फूलचन्द—सोचा समझा है, इसीलिए तो आलोचना करने का साहस करते हैं। आप लोग बेसमझी की बहस और व्यर्थ की लड़ाई तो बहुत कर सकते हैं, परन्तु विचार और चिन्तन नहीं करते।

गोकुल– (*दूसरी लड़ाई मोल लेने की मन में गुंजाइश न पाकर*) जितना सोचने का समय मिलता है उतना सोच लेते हैं। पढ़ने, लिखने, व्यायाम और सेवा इत्यादि के काम से अवकाश ही कहां मिल पाता है ? तो भी कुछ तो सोचते ही हैं।

साधू—हम चाहते हैं कि सन्त-मार्ग का भी थोड़ा सा अनुशीलन करो। अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए हमको दस हज़ार विद्यार्थियों की ज़रूरत है।

फूलचन्द—आपका उद्देश्य क्या है स्वामी जी ?

साधू—तीर्थों की व्यवस्था और गङ्गा जी की धार को बांध कर नहरों में ले जाने का घोर विरोध।

गोकुल—अखीरी विषय के ऊपर साधुओं ने काफ़ी विचार और चिन्तन किया होगा ?

साधू—(*व्यङ्ग को न समझकर*) और नहीं तो क्या ? अनेक बैठकें और अधिवेशन किए हैं। बहुत चन्दा इकट्ठा किया है। हमारे आन्दोलन में कई पैन्शन-प्राप्त बड़े बड़े सरकारी नौकर, एसेम्बली के मेम्बर, राजा और बड़े बड़े सेठ हैं।

फूलचन्द—राजा और सेठ इस लोक में पैसे और आराम की बढ़ोत्तरी के लिए और दूसरे लोक में मौज के लिए साधुओं का आशीर्वाद चाहते हैं।

गोकुल—और, पैन्शन-प्राप्त सरकारी नौकरों को और कोई काम है नहीं।

साधू—एसेम्बली के मेम्बर क्यों साथ दे रहे हैं?

गोकुल—अगले चुनाव में आप लोगों में से अनेक का वोट पाने के लोभ से।

साधू—इतनी नास्तिकता अच्छी नहीं बाबू। मैं बहस करने के लिए सदा उद्यत रहता हूँ। तुमको समझाने के लिए तैयार हूं। करो आरम्भ।

फूलचन्द—(*मुस्कराकर*) यह अभी अभी एक लम्बी बहस से निबटे हैं। अब शायद ही और अधिक बहस के भूखे हों। बहस से बिलकुल लगी हुई मञ्जिल डण्डे-छुरियों की है। इसलिए, स्वामी जी, कोई और मधुर मनोरञ्जक वार्ता होने दीजिए—फिर, गाड़ी आ जाने पर, सारा बखेड़ा अपने आप समाप्त हो जावेगा, और, आप कहीं, और हम कहीं।

साधू—तुम लोग तो आगरा जा रहे हो न? चलो, और हमारे अधिवेशन में काम करो।

गोकुल—पर हम लोग आगरा कहां जा रहे हैं? आगरा की ओर जा रहे हैं।

साधू—एक दिन के लिए उतर पड़ना, बस।

गोकुल—और जो आगरा के पहले ही किसी स्टेशन पर उतरना हुआ तो? आगरे का टिकट ही न हुआ तो?

साधू—तो थोड़ा सा और आगे बढ़ जाना।

गोकुल—फिर चाहे, पकड़े जायँ? जुर्माना देना पड़े?

साधू—(*मुँह फेरकर*) अच्छी बातों के लिए असली त्याग करना जानते ही नहीं हो।

फूलचन्द—इस जगह हम और आप सहमत हैं।

गोकुल—बहस बेकार है।

साधू—चुप तो नहीं बैठ सकते।

फूलचन्द—अवश्य बैठेंगे। मैं गाना गाता हूं। जब तक गाता रहूंगा, बहस पास नहीं फटक सकती। (*तुरन्त गाने लगता है*)

गान

जीवन के उपवन में फूले, फूल,
मुरझाने खिलने के क्रम में कभी न करते भूल।
कोई उनको वर्जित करता,
कोई उनके लिए ललकता,
पथिक न उनको शूल समझना,
उरझ मुरझ का भय मत करना,
ललक ललक कर जब देखोगे हृदय उठेगा भूल।
जीवन के उपवन में फूले फूल।

साधू—बस, आप लोगों में यही गाना रह गया है! सूरदास के पद गाने में आप लोगों को कौनसी बाधा प्रतीत होती है?

फूलचन्द—कोई भी नहीं। जब किसी आड़-ओट की अटक प्रतीत होती है तब वैसा गाने लगते हैं। नहीं तो, सीधी ठेठ बात खड़ी बोली में—और कभी कभी उसकी भी छाया की छाया में।

साधू—(*समझ न पाकर*) यही दुर्गुण विद्यार्थियों में बहुत आगया है। सिवाय काम की रँगी हुई बातों के और कुछ है ही नहीं उनकी गाँठ में।

फूलचन्द—तो कोई निष्काम आप सुनाइए। आरम्भ करिए।

साधू—(*क्रुद्ध स्वर में*) मैं साधू हूँ। याद रखना। ठठोली मत करो। मैं मरने-मारने से नहीं डरता।

गोकुल—बाबा जी, हमको दोनों में से एक के लिए भी फ़ुर्सत नहीं। और न कोई इच्छा है।

फूलचन्द—एक से मुश्किल से छुटकारा पाया!

गोकुल—तो दूसरा जान को आगया!

(नेपथ्य में हड़बड़ी होती है)

एक आवाज़—क्या गाड़ियां लड़ गईं ?

दूसरी—कहां ? कहां ? कैसे ? क्या हुआ ?

तीसरी—यहाँ से जाने वाली और वहाँ से आने वाली गाड़ियाँ यहाँ से थोड़ी सी दूरी पर लड़ गई हैं!

एक—हाय राम! बहुत आदमी मरे और घायल हुए होंगे। बहुत थोड़े बचे होंगे।

दूसरी—बाबुओं की ग़फ़लत से हुआ है यह भयङ्कर बीभत्स! इन्हीं लोगों ने लड़ाया गाड़ियों को!!

तीसरी—बहुतेरों को रेलवे वाले ही कहीं खपा रहे होंगे।

(नेपथ्य में शोर बढ़ता है। फूलचन्द, गोकुल और साधू खड़े हो जाते हैं।)

फूलचन्द—ओफ़, यह क्या हुआ! उस बिचारी लड़की का क्या हाल हुआ होगा ?

साधू—संसार में इतने पाप बढ़ गए हैं कि इस प्रकार की दुर्घटनाएँ नित्य की बातें हो गई हैं! नारायण, नारायण। शिव, शिव। उधर जाकर देखूँ क्या हुआ है। (*जाता है*)

गोकुल—ओफ़ ! कितने ग़रीब और निस्सहाय मरे और घायल हुए होंगे ! वह अन्धी भिखारिन और दीन लड़की भी इसी गाड़ी से गई थी। तुमने तो डिब्बे में बैठे देखा था उनको फूल ?

फूलचन्द—देखा था। उसी में मन्दाकिनी बैठी थी !

(नेपथ्य में शोरगुल और भरभराहट होती है)

एक आवाज़—एक गाड़ी का एञ्जिन बच गया है। वह मरों और घायलों को घसीट लाया है।

(पुलिस के सिपाही प्रबन्ध के लिए दौड़ पड़ते हैं। आते हैं और चले जाते हैं।)

नेपथ्य में एक सिपाही—खबरदार, कोई किसी के माल-असबाब के पास मत जाना।

दूसरा—जल्दी करो। घायलों को अस्पताल में भेजो। होशियारी के साथ ! होशियारी के साथ !!

[प्लेटफ़ार्म पर घबराए हुए लोगों की दौड़धूप होती है। एक ओर से एक स्ट्रेचर पर मन्दाकिनी और दूसरी पर पुनीता लाई जाती हैं। साथ में रेडक्रास के लोग हैं। दूसरी ओर से गठरी लिए हुए भीडाराम आता है। पीछे पीछे कुछ सिपाही हैं।]

भीडाराम—(*चिल्लाकर*) हम लोग घायलों के उठाने का काम ज्यादा अच्छा कर सकते हैं। कहां हैं घायल ?

एक रेडक्रास वाला—घायल तो सब आ गए और अस्पताल में भेज दिए गए। केवल ये दो स्त्रियां इस मार्ग से लाई जा रही हैं।

भीडाराम—हम भी कुछ काम करेंगे डाक्टर जी। गाड़ी तो अब बहुत देर में लगेगी न ?

रेडक्रास वाला—हां, बहुत देर में जायगी। यदि आपको कोई सेवा करनी हो तो आइए अस्पताल में। कुछ घायलों को रक्त देना पड़ेगा।

भीडाराम—खुशी से। हमने पहले भी दिया है।

रेडक्रास वाला—तो चलिए।

फूलचन्द—*(रुद्ध स्वर में)* ये स्त्रियां कौन हैं? मेरा मतलब है—इनके नाम क्या हैं?

रेडक्रास वाला—मुझको नहीं मालूम।

[वह जाना चाहता है। गोकुल पास जाकर पुनीता के फटे कपड़ों को देखता है और पीछे हट जाता है। फूलचन्द मन्दाकिनी वाले स्ट्रेचर के पास जाता है, परन्तु देख नहीं पाता है। स्ट्रेचर वाले और रेडक्रास के लोग चले जाते हैं। फूलचन्द को देखकर भीडाराम स्मरण करने की कोशिश करता है। अपने एक साथी से कहता है, 'यह वह नहीं है। शायद बिचारा रेलकी टक्कर में मारा गया हो।' रेडक्रास वालों के पीछे पीछे भीडाराम और कुछ सिपाही जाते हैं। प्लेटफ़ार्म पर भीड़ कम हो जाती है।]

गोकुल—उस स्ट्रेचर पर तो वह पागल लड़की थी। *(अन्यमनस्कता के साथ)* पागल होने पर भी वह गाती कितना अच्छा थी! उसका कण्ठ कितना मनोहर था!!

फूलचन्द—*(कुछ घबराहट के साथ)* दूसरे स्ट्रेचर पर कौन रहा होगा? तुमने कुछ देखा? मैंने तो नहीं देख पाया।

गोकुल—देख नहीं सका। शायद मन्दाकिनी हो। शायद उस पगली की अन्धी मां हो। वह बुढ़िया।

फूलचन्द—*(निश्चिन्त सा होकर)* बुढ़िया? हां, हो सकती है। *(दूसरी ओर देखते हुए)* कहीं मन्दाकिनी न हो?

गोकुल—*(उपेक्षा के साथ)* सम्भव है, मन्दाकिनी हो।

फूलचन्द—क्या करना चाहिए? कैसे निर्णय हो?

गोकुल—जो मर गए हैं या बच गए हैं, उनका पता रात में लगाना बहुत कठिन है। जो घायल हो गए हैं उनकी खोज-खबर अस्पताल में लग सकती है।

फूलचन्द—चलो न ? यहां पड़े पड़े क्या करेंगे ?

गोकुल—मैं भी यही सोच रहा था। चलो। ज़रूरत पड़ी तो हम लोग घायलों की कुछ सेवा भी करेंगे।

(दोनों जाते हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान—अस्पताल का एक साफ़ सुथरा कमरा। एक पलंग पर मन्दाकिनी और एक पर पुनीता अचेत पड़ी है। नर्स और डाक्टर उनका निरीक्षण कर रहे हैं। ज़रा दूर फूलचन्द और गोकुल बैठे है। समय प्रातःकाल।]

डाक्टर—इस भिखारिन लड़की के लिए मनुष्य का थोड़ा सा मोटा चमड़ा चाहना पड़ेगा।

गोकुल—*(डाक्टर के पास आकर)* और न मिला तो ?

डाक्टर—न मिला तो शायद प्राण संकट में पड़ जायंगे।

नर्स—इसकी मां—अन्धी बुढ़िया—होती तो दे देती। इसके तो शायद और कोई नहीं है।

डाक्टर—उसके लिए भी कुछ खून भी चाहना पड़ेगा।

फूलचन्द—*(डाक्टर के पास आकर)* और उसकी क्या दशा है ? मन्दाकिनी की ?

डाक्टर—उसके लिए भी खून देना पड़ेगा।

फूलचन्द—मन्दाकिनी को मैं अपना खून देने को तैयार हूँ। कितना
ना होगा ?

डाक्टर – चार आउन्स। (*मुस्कराकर*) ज्यादा नहीं देना पड़ेगा।

फूलचन्द—(*जगे हुए डर को भीतर ही दबाकर*) मेरे स्वास्थ्य
ो जांच कर लीजिए। रात भर का जागा हुआ हूँ। पहले से थका
आ भी हूँ। आप समझें कि बिना किसी संकट के मैं अपना रक्त दे सकता
तो चार क्या छः आउन्स ले लीजिए। पहले जांच अवश्य कर
ीजिए। मुझको पारसाल मलेरिया भी हो चुका है।

डाक्टर—जांच लूंगा। नर्स, रक्त—परीक्षा का सामान ले आओ।

(*नर्स जाती है। दरवाज़े पर भीडाराम दिखलाई पड़ता है*)

भीडाराम—डाक्टर जी, मैं भी कुछ सेवा करना चाहता हूं।

डाक्टर—भीतर आइए। (*भीडाराम आता है*)

भीडाराम—जाने के लिए अभी गाड़ी जोड़ी नहीं गई है—काफ़ी
र है। मुझसे कुछ काम ले लीजिए न ?

डाक्टर—आप अपना कुछ चमड़ा और खून उस रोगी को (*पुनीता
की ओर संकेत करके*) दे सकते हैं ? वह बहुत निस्सहाय है। उसके
ोई नहीं मालूम पड़ता। अन्धी मां थी—वह मर गई—शायद।

भीडाराम—यह वह भिखारिन लड़की है! गाती अच्छा है। इस
बेचारी की बुढ़िया रेल की टक्कर में मारी गई!! इसके कोई नहीं!!! मैं
अपना खून उसको दूंगा। और यदि वह पसन्द करेगी तो अच्छी होने पर
इसके साथ शादी भी कर लूंगा।

[*गोकुल की आंखें तरेर खा जाती हैं। फूलचन्द मुस्कराता है
और डाक्टर हँस पड़ता है*]

डाक्टर—शादी की बात अभी से ?

भीडाराम—क्यों साहब ? जन्म, शादी और मरण सब साथ लगे हुए हैं। शादी की बात तो हर कोई बहुत पहले से सोचता है। मैं छुट्टी ले लूँगा, कोई बात नहीं। मेरे पास पैसा है। और भी कमाऊँगा।

डाक्टर—थोड़ा सा चमड़ा भी देना पड़ेगा ?

भीडाराम—(*पहिचानी हुई भूमि पर चलने में निर्भय, अन्यथा किंकर्तव्यविमूढ़। सोचते हुए*) चमड़ा ! कौनसा चमड़ा ? कहां का ?

डाक्टर—अपने शरीर का ज़िन्दा चमड़ा। थोड़ा सा ही—केवल छः वर्ग इञ्च—तीन इञ्च लम्बा, दो ढाई इञ्च चौड़ा।

भीडाराम—वह तो साढ़े सात वर्ग इञ्च हो गया ! अपने शरीर का चमड़ा ! साढ़े सात वर्ग इञ्च !! फिर मेरा घाव कैसे पुरेगा ? मुझको अपना चमड़ा कौन देगा ? (*सोचकर*) डाक्टर साहब, आप—या आपकी नर्स, अस्पताल की नर्स अपना चमड़ा नहीं दे सकती ?

(*गोकुल कुछ सोचता हुआ सिर हिलाता है*)

डाक्टर—(*हँसकर*) तब तो कुछ दिनों बाद संसार में डाक्टर का केवल नाम ही रह जायगा—चमड़ा, खून, मांस, हड्डी दो चार हफ्तों में सब ग़ायब।

भीडाराम—(*निश्चय के साथ*) मैं अपना खून देने को तैयार हूँ। निकाल लीजिए।

डाक्टर—अकेले खून से क्या होगा ? बिना चमड़े के काम नहीं चल सकता।

भीडाराम—(*और भी दृढ़ता के साथ*) चमड़ा किसी और का ले लीजिए।

डाक्टर—शादी आप करेंगे और चमड़ा कोई और देगा !

(*मुस्कराता है*)

(*छातीपर हाथ बाँधकर गोकुल धीरे से डाक्टर के और निकट आता है*)

गोकुल—मैं दूँगा चमड़ा और रक्त दोनों।

डाक्टर—*(प्रसन्न होकर)* देखा हवालदार साहब? ऐसे लोगों की
ादी होती है जल्दी।

गोकुल—*(हलकी मुस्कराहट के साथ)* मुझको उसके साथ ब्याह-
ाह कुछ नहीं करना है।

डाक्टर—*(ज़रा झेंपकर)* क्यों? लड़की है तो बहुत सुन्दर।
ाड़ी सी पागल ज़रूर कही जाती है। सो इसका इलाज हो जायगा—
ौर फिर कालेज के लड़कों को पागलपन का डर ही क्या?

गोकुल—*(और भी मुस्कराकर)* कालेज के लड़कों का अभी आपने
रा पागलपन नहीं देखा है, डाक्टर साहब। एक छोटा सा नमूना मैं हूँ।
सके साथ ब्याह करूँगा जिसने मुझको गाली दी थी! *(हँसकर)* ब्याह
रूंगा तो जन्म भर गालियां खाने को मिलेंगी। परन्तु फिर भी अपना
ून और चमड़ा दूँगा।

फूलचन्द—क्या कर रहे हो गोकुल?

गोकुल—जो कुछ तुम कर रहे हो। तुम—तुम किसी सद्भावना या
म वश कर रहे हो और मैं हिंसावश। *(हँसता है)* जल्दी करिए डाक्टर
ाहब, उसका कष्ट दूर हो और मेरा पागलपन।

भीडाराम—चमड़ा दे रहे हो! और खून भी!! और शादी भी
हीं करोगे!!!

फूलचन्द—*(कुढ़कर)* काम बांट लो न हवालदार जी? तुम खून
दो और उसके साथ विवाह करलो! यह चमड़ा दे देंगे और अपनी
सा को साथ लेकर चले जायंगे!!

(डाक्टर और गोकुल हँसते हैं)

भीडाराम—ओह! मुझको याद आ गया, यह तो वह बाबू है
जसने माफी मांगी थी।

गोकुल—बेशक माफी मांगी थी। मैंने काम ही ऐसा किया था। उस बाबू का पता तो आपको लगा न होगा? शायद मर ही गया हो बिचारा।

भीडाराम—ऐसा ही जान पड़ता है। मिलता तो उससे कुछ बात जरूर करता। छोकरा फ़ौज के लायक़ था।

फूलचन्द—कौन?

गोकुल—(हँसकर) बतलाऊंगा। मर गया बिचारा।

भीडाराम—आप लोग ठठोली कर रहे हैं। मैं अपनी गाड़ी को देखूं। जुड़ गई होगी।

डाक्टर—(और भी हँसकर) जरूर।

(भीडाराम जाता है। नर्स रक्त-परीक्षा का सामान ले कर आती है)

फूलचन्द—किस बिचारे का ज़िकर कर रहे थे, गोकुल?

गोकुल—तुम्हारा।

फूलचन्द—मेरा! मैं जो यहां समूचा जिन्दा खड़ा हूँ!!

डाक्टर—(*रक्त-परीक्षा का सामान हाथ में लेकर बिना उत्सुकता प्रकट किए हुए*) क्या मसखरापन है?

गोकुल—यों ही डाक्टर साहब। इनसे और उस हवालदार से कुछ झगड़ा हो गया था। उसको केवल झगड़ा याद रहा और शकल भूल गई।

डाक्टर—सिपाही जो ठहरा। (*फूलचन्द से*) आओ तुम्हारे खून की जांच करलूं।

फूलचन्द—(*उत्साह के साथ*) मलेरिया मुझको पारसाल आया था जो बिलकुल अच्छा हो गया था। थकावट चलने फिरने के कारण हुई,

और रात के जागने का मेरे अच्छे भले रक्त पर प्रभाव ही क्या पड़ सकता है ? जांच की क्या ज़रूरत है ?

डाक्टर—(*मुस्कराकर*) परन्तु आपने मुझको सन्देह में डाल दिया। जांच कर ही लूं।

(*डाक्टर दोनों के रक्त की परीक्षा करता है*)

फूलचन्द—ठीक है न ?

डाक्टर—बिलकुल।

गोकुल—केवल अनुशासन की कमी निकली होगी ?

डाक्टर—(*मुस्कराकर*) परन्तु त्याग कुछ अधिक मात्रा में पाया गया है।

फूलचन्द—और इसके रक्त में संयम बिलकुल ही न पाया गया होगा ?

डाक्टर—संयम बिलकुल नहीं और पागलपन लबालब। (*यकायक गंभीर होकर और गले के रुद्ध स्वर को मुक्त करने के प्रयत्न में*) इतना जो शहीदों को पैदा कर सकता है। एक लड़का मेरा भी है। कालेज में पढ़ता है। ऐसा ही कांफ्रेन्स, अधिवेशन करने वाला, सड़कों पर भीड़भाड़ उत्पात करने वाला। (*रूमाल से आंखों के गीलेपन को दूर करके*) तुम लोगों सरीखा ही निकले तो अपने को धन्य समझूंगा।

नर्स—डाक्टर साहब, और भी मरीज़ देखने को पड़े हैं।

डाक्टर—हां जी, अभी देखता हूं। (*गोकुल से*) तुम खून भी दोगे और चमड़ा भी ! खून किसी और का लिए लेता हूं।

गोकुल—(*हँसकर*) हवालदार जी तो चले गए। (*गंभीर होकर*) किसी और का मत लीजिए। उस पगली से मुझको पूरा बदला लेना है। थोड़ा सा कम हो जायगा। मैं मर तो जाऊंगा नहीं !

डाक्टर—(*स्नेह के साथ*) बको मत। (*पुचकार कर*) कमज़ोर पड़ जाओगे। और कुछ न होगा।

फूलचन्द—(*हँसकर*) इसको परीक्षा में फेल तो वैसे भी होना है। यह एक अच्छा बहाना रहेगा।

गोकुल—(*हँसकर*) छिश! मैं इस बात को कहीं भी नहीं कहूंगा। (*गंभीरता के साथ*) और न तुम कहीं कहना, फूल। डाक्टर साहब सो किसी से कहेंगे ही क्यों?

डाक्टर—(*हँसकर*) मैं कहने क्यों चला? मैं तो समाचार-पत्रों में छपवा दूँगा। कहता फिरे उसका पढ़ने वाला।

गोकुल—(*अनुनय के साथ*) नहीं डाक्टर साहब आप ऐसा मत करिएगा।

डाक्टर—अच्छा, अच्छा। अब चलो काम करूं। (*फूलचन्द से*) मन्दाकी—या क्या नाम है इसका?—जल्दी चंगी हो जायगी। दूसरी लड़की के स्वस्थ होने में कुछ समय लगेगा।

तीसरा दृश्य

[स्थान—बग़ीचे का एक भाग। फूलचन्द के साथ मन्दाकिनी आती है। वह कोई शृङ्गार नहीं किए है। कुछ दुर्बल है—स्वस्थ होती चली जारही है। समय सन्ध्या।]

फूलचन्द—दिन ने अँगड़ाई ली और साँझ आ गई।

मन्दाकिनी—(*मुस्कराकर*) सांझ की झुरझुरी में रात को आने में देर न लगेगी।

फूलचन्द—आधी रात के फूल, लालमुनैयों के बोल! फिर ऊषा के पीतपट और दूबा की गोद में हँसते हुए मोती।

मन्दाकिनी—और फिर नौ बजे दिन को स्टेशन पर एञ्जिन की घरघराहट और गाड़ी की भरभराहट।

फूलचन्द—*(सांस लेकर)* यहाँ कविता कुण्ठित हो जाती है।

मन्दाकिनी—और रेल के डिब्बे में बैठकर चली जावेगी। मैं कठिनाई के साथ यहां तक आ पाई हूँ। मेरी खबर पाकर जिस दिन से माता-पिता यहाँ आगए हैं, मुझको अपना कर्तव्य याद आ गया है। आप उनसे बात करें। यदि उन्होंने नाहीं करदी तो मेरी नाहीं अभी ले लीजिए।

फूलचन्द—मैं तुमसे कह सकता हूं, उनसे नहीं कह सकता हूँ।

मन्दाकिनी—तो आपके माता-पिता कहें।

फूलचन्द—हमारे तुम्हारे माता-पिता कालेजों में एक साथ पढ़ने को नहीं रोकते! आम सड़कों पर साइकिलों का दौड़ाना मना नहीं करते!! फिर इसी के लिए क्यों उनका नाम बीच में डाला जाय?

मन्दाकिनी—तो कह लीजिए न। मैं क्या निषेध करती हूँ?

फूलचन्द—कुछ बेढङ्गा सा लगता है।

मन्दाकिनी—क्यों? सोचा कभी क्यों बेढङ्गा सा लगता है? कालेज से बाहर के जीवन में तो कोई लड़के लड़की एक स्थान पर मिलते नहीं। फिर यहां असमञ्जस क्यों न हो?

फूलचन्द—हम तुम इस असमञ्जस को तोड़ें। हम लोग क्यों न आरम्भ करदें?

मन्दाकिनी—मैं ऐसी फूहड़ नहीं हूं। इतनी फूहड़ तो वह भिखारिन भी न होगी। माता-पिता के आशीर्वाद बिना विवाह अधिक अंशों में अभिशाप ही होकर रहेगा।

फूलचन्द—पुनीता के कोई नहीं है—तो या तो उसका विवाह ही नहीं होना चाहिए। और, यदि हो गया तो अभिशाप होकर रहेगा।

मन्दाकिनी—यह तो अपवाद है - केवल अपवाद। और फिर यह निस्सन्देह नहीं कि उसकी बुढ़िया माँ मर ही गई हो। जिनको उस रात या दूसरे दिन मरा हुआ समझा गया था उनमें से कई जीवित मिल गए। सम्भव है बुढ़िया मरी न हो। उसकी लाश कहीं मिली?

फूलचन्द—सम्भव है बच गई हो।

मन्दाकिनी—यदि वह बच गई है और पुनीता का पता लगाती हुई आ जाय और अपना आशीर्वाद देदे तो आप उस लड़की के साथ ब्याह कर लेंगे? आपने कई बार उसके सौन्दर्य की सराहना की है।

फूलचन्द—उसके सौन्दर्य की और गाने की भी। परन्तु ब्याह तो मन मिलने की बात है। मेरा मन नहीं चाहता।

मन्दाकिनी—मन जैसी चञ्चल चीज़ का क्या भरोसा? आप किसी दिन उस पर रीझ सकते हैं या किसी और पर भी।

फूलचन्द—मैं तुम्हारे सौन्दर्य पर अपने को न्योछावर करता हूँ।

मन्दाकिनी—(*मुस्कराकर*) जो कि आपको शायद कुछ दिनोंमें बहुत नहीं जान पड़ेगा।

फूलचन्द—तुम अपना और मेरा—दोनों का—अपमान कर रही हो। (*उत्तेजित होकर*) और भी कोई त्याग करना पड़े तो कर सकता हूँ।

मन्दाकिनी—मैं न आपके सौन्दर्य-पूजन का और न रक्तदान का अपमान कर रही हूँ। मैं वह बात कर रही हूं जो जीवन भर निभाव का काम दे।

फूलचन्द—(*क्षोभ का दमन करता हुआ, मुस्कराहट के साथ*) मैं दृढ़ हूँ, कभी नहीं फिसल सकता। (*उलहने के ढङ्ग पर*) मैंने थोड़ासा रक्त दे दिया तो कौनसी बड़ी बात हो गई? तुमको उसका ज़िकर नहीं करना चाहिए था। उस छोटे से काम की खुशी मेरे भीतर-मन की एक निधि है।

मन्दाकिनी—आपने मेरे लिए कुछ त्याग किया है—इसमें कोई ङ्का नहीं। परन्तु उस ग़रीब भिखारिन के लिए आपके साथी ने जो कुछ कया वह वर्णन के बाहर है। अब गोकुल का क्या हाल है?

फूलचन्द—अच्छा हो गया है। चलने-फिरने लगा है, परन्तु गुम ने रहने के लिए कुछ अलग, इखरा-बिखरा सा रहता है। हां, त्याग तो सने भी किया है, परन्तु इतनी खाल तो कितनों की यों ही खेल-कूद में नकल जाती है।

मन्दाकिनी—इस पर भी वह विज्ञापन नहीं कर रहा है।

फूलचन्द—(*मुस्कराकर*) तो क्या मैं कोई विज्ञापन कर रहा हूं? मैंने म्हारे सिवाय और किसी से नहीं कहा।

मन्दाकिनी—इसीलिए कहती हूँ कि ब्याह की बातचीत माता-पिता । अभिभावक द्वारा होनी चाहिए।

फूलचन्द—तुम बातचीत में अपनी आयु के बहुत आगे निकल ई हो। मुझको आश्चर्य होता है।

मन्दाकिनी—तभी तो यात्रा के लिए अकेली चल पड़ी थी।

फूलचन्द—तो फिर जन्मसंगिनी बनने की हामी भरने में तुमको क्या ड़चन है?

मन्दाकिनी—आज रात अच्छी तरह सो लीजिए। सबेरे कदाचित् स प्रसङ्ग को आप दूसरी तरह सोचेंगे।

फूलचन्द—तुम क्या मुझको इतने अस्थिर विवेक का समझती हो न्दाकिनी! मैं दृढ़ हूँ।

मन्दाकिनी—मैं भी दृढ़ हूँ। मैं अपने माता-पिता, कुटुम्ब, संस्कृति । और अपना तिरस्कार नहीं कर सकती। अपने विवेक की आप जानो।

(*जाती है*)

फूलचन्द—यह अत्याचार है, मन्दाकिनी !

(*मन्दाकिनी लौट पड़ती है*)

मन्दाकिनी—क्या है ? आप क्यों इतना शोर कर रहे हैं ?

फूलचन्द—तुमको ख्याल होगा जब हम लोगों ने एक दूसरे को पहलेपहल देखा।

मन्दाकिनी—पहलेपहल एक दूसरे को बहुतसे स्त्री-पुरुष देखते हैं, परन्तु वे तुरन्त एक दूसरे के साथ ब्याह नहीं कर डालते।

फूलचन्द—आँखों से आँखें मिलने पर दूखने को आ जाती हैं।

मन्दाकिनी—अच्छी हो जाती हैं, खुल जाती हैं, और फिर दूखने को नहीं आतीं।

फूलचन्द—पर वे एक दूसरे में समा जाने पर ही अच्छी होती हैं।

मन्दाकिनी—और कुछ ! मैं अब जाना चाहती हूँ।

फूलचन्द—जब हम लोगों ने उस रात प्लेटफ़ार्म पर एक दूसरे को देखा, तभी मेरे मन में आगया था कि,.........

मन्दाकिनी—उँह ! बहुत सुन चुकी हूं। बहुत लोगों ने देखा था। मैंने किसी से नहीं पूछा कि किसके मनमें क्या क्या आया। मैं अकेली थी। सो नहीं गई थी। कुछ न कुछ देखना ही पड़ा। विद्यार्थियों की लबड़धोंधों देखी, सिपाहियों का भेड़ियापन देखा; किसी के इशारे देखे, किसी का आँख मारना। ब्याह के लिए ये सब अलग अलग दावे होगए !

फूलचन्द—मेरा दावा दूसरी प्रकार का है—तुम भूलती हो।

मन्दाकिनी—नहीं भूलती हूं। आपने मेरे बिस्तर उठाए, गाड़ी में बिठला दिया। जब घायल होकर लौटी तब आपने अपना रक्त दिया। कृतज्ञ हूँ। पर किसी भी पुरुष को किसी भी स्त्री के लिए इतना तो करना ही चाहिए न ?

फूलचन्द—*(निश्वास लेकर)* तुम्हारे बिना मेरा जीवन अन्धकारपूर्ण हो जायगा।

मन्दाकिनी—*(फुफकार की सांस छोड़कर)* बिजली की तेज़ रोशनी में स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर किसी मित्र के साथ बैठ जाइए और करिए लफङ्गपन पर लफङ्गपन, जीवन प्रकाश से भर जायगा!

फूलचन्द—तो फिर मैं तुम्हारे पिता जी से ही चर्चा करूँ?

मन्दाकिनी—करिए या न करिए—मेरा इनकार इसी समय ले लीजिए। मैंने तो आपको समझ ही लिया है, मेरे माता पिता को और भी जल्दी समझ में आ जायगा।

फूलचन्द—ओफ़, ओ! समझ में नहीं आता क्या किया जाय। मैं नहीं जानता था ...

मन्दाकिनी—*(टोककर, क्षुब्ध स्वर में)* कि डिब्बे में बिस्तर रख देने और चार आउन्स खून दे देने से स्त्रियां ख़रीदी नहीं जा सकतीं। आप अपने घर जाइए, मैं अपने घर जाती हूँ। नमस्ते! *(जाती है)*

फूलचन्द—*(मरे से स्वर में)* न...म...स्ते।

(फूलचन्द माथा टटोलता हुआ दूसरी ओर से जाता है।)

चौथा दृश्य

[स्थान—अस्पताल का कमरा। पुनीता पलंग पर लेटी है। वह स्वस्थ होती चली जा रही है, परन्तु निर्बल है। गोकुल उसके पास कुर्सी पर बैठा है। समय—दिन।]

पुनीता—मैं चाहती हूँ थोड़ा घूमूं फिरूं और फिर मां की खोज करूं। मुझको विश्वास है वे जीवित हैं।

गोकुल—मेरा भी मन कहता है, परन्तु अभी चलो फिरो मत। डाक्टर ने अनुमति नहीं दी है।

पुनीता—वाह ! कह तो गए आज सवेरे कि कमरे में चलो फिरो। जैसा ही कमरा वैसा ही थोड़ा सा बाहर।

गोकुल—हां, और जैसा ही थोड़ा सा बाहर वैसा ही कुछ दूर और।

पुनीता—आप मुझको हैरान करते हैं। *(करवट ले लेती है)*

गोकुल—बस थोड़े दिन और, जैसे ही खूब स्वस्थ हो गईं स्वच्छन्द हो।

पुनीता—*(उसकी ओर करवट लेकर)* आप अपने घर नहीं गए? आपके साथी साथिन तो कभी के गए!

गोकुल—क्योंकि मेरा काम अभी अधूरा है।

पुनीता—फिर कहां जायंगे आप?

गोकुल—अभी जहां के लिए तुमने कहा था। अपने घर।

पुनीता—*(ऊपर की ओर आंखें करके)* और मैं कहां जाऊंगी? मेरी मां मिल गई तो मेरा घर मिल गया—और मेरा गाना तो बाप की तरह सहायक और रक्षक है ही।

गोकुल—पुनीता, तुमको क्रोध क्यों जल्दी आ जाता है?

पुनीता—लोग मुझको क्यों चिढ़ाते हैं? लोग क्यों मुझको तङ्ग करते हैं? लोग बांस से मार दें तो उतना कष्ट न हो जितना उनके फांस चुभाने से होता है। मैं क्रोध न करूं तो कैसे बचूं? लोग मुझको यों ही पागल कहते हैं। क्या मैं पागल हूँ? तुम्हीं कहो। पागलों का जैसा मैं क्या करती हूं?

गोकुल—कुछ भी नहीं। और मैं ऐसा क्या करता हूं? परन्तु मेरा मित्र फूलचन्द मुझको पागल कह गया है।

पुनीता—*(गोकुल पर आँख गड़ाकर)* आप को पागल कहते हैं! *(हँसती है)* कुछ कुछ आप हैं भी। क्यों यहां लगातार बैठे रहते हैं!

एक भिखारिन के पास जिसकी गांठ में कुछ नहीं ! और अपना इतना पैसा खर्च कर रहे हैं ! (*तेज़ होकर*) परन्तु मैं मुफ्त में कुछ भी नहीं लूंगी। कई गाने सुनाऊंगी, कई दिन सुनाऊंगी।

(गोकुल का हाथ यकायक अपने उस अंग पर जाता है जहाँ से डाक्टर ने पुनीता के लिए चमड़ा निकाला था और जिसका अंगूर अब भी ज़रा हरा है। पुनीता देख लेती है। बिस्तरों में थोड़ा सा उठती है।)

पुनीता—आपकी चोट अभी अच्छी नहीं हुई ? आप तो उस गाड़ी में थे नहीं, फिर इतनी बड़ी चोट कैसे लगा ली ? आप कहते थे प्लेटफार्म पर से फिसल पड़े थे। मैंने कई मजदूरों को रिपट कर गिरते देखा है और उनके गिरने पर हँसी हूँ और उन मजदूरों की गालियां भी खाई हैं परन्तु ऐसी चोट किसी को लगते नहीं देखी !

गोकुल—बड़ी बड़ी चोटें आसानी से लग जाती हैं।

पुनीता—और छोटी छोटी चोटें मुश्किल से। (*हँसकर*) तभी सहज ही गाड़ियों की टक्कर में मुझको बड़ी चोट आ गई। (*तुरन्त उदास होकर*) मेरी मां का क्या होगा ? आप यदि मेरी मां को तलाश करदें तो कितनी बड़ी बात होगी।

गोकुल—अच्छा होते ही पहला काम यही करूंगा।

पुनीता—घर पर आपके लिए बड़ी चिन्ता होगी। कोई आया नहीं, क्या बात है ?

गोकुल—मेरी ही तरह मेरे घर के लोग निश्चिन्त हैं। मैंने कुशल क्षेम की चिट्ठी डाल दी है और यहां आने से रोक दिया है। किसी दिन पहुंच जाऊंगा।

पुनीता—चोट का हाल भी लिख दिया ?

गोकुल—अरे नहीं। लिखने से वे लोग ज़रूर आ जाते। (*नेपथ्य की ओर*) कोई आ रहा है। शायद डाक्टर साहब हों।

पुनीता—मैं उनसे बाहर टहलने के लिए पूछूंगी।

(*डाक्टर आता है और पुनीता का निरीक्षण करता है*)

डाक्टर—अब तो थोड़ी सी ही कसर है।

पुनीता—डाक्टर साहब, मैं बाहर जाकर थोड़ा सा टहलना चाहती हूँ। पड़े पड़े उकता उठी हूँ।

डाक्टर—(*हँसकर*) और बाहर जाकर गाना भी चाहती हैं न? चिड़िया पेड़ की डाली डाली पर उचक कर चहकना चाहती है। (*गोकुल से*) इसको यह पागलपन मत करने देना।

गोकुल—(*मुस्कराकर*) मैं पहरे पर हूँ। न करने दूंगा।

पुनीता—इनका घाव नहीं देखा डाक्टर साहब? कब तक अच्छा हो जायगा? यह कब तक खूब स्वस्थ हो जायंगे?

डाक्टर—कुछ दिनों बाद। चिन्ता मत करो।

पुनीता—यह जल्दी अच्छे हो जायं तो मेरे ऊपर का पहरा टूट जाय। (*हँसकर*) और फिर मैं खूब मनमाना चलूं फिरूँ।

डाक्टर—इनकी इजाज़त बिना कुछ नहीं कर सकोगी।

पुनीता—(*ज़रा तेज़ होकर*) इनका या किसी का मेरे ऊपर क्या हक़ है? क्या अधिकार है?

डाक्टर—कुछ हक और अधिकार है तभी तो कहा।

(*गोकुल आंख के संकेतसे वर्जित करता है। पुनीता देख लेती है*)

पुनीता—(*तेज़ होकर*) आप मेरे बाप के बराबर हैं डाक्टर साहब। इन्होंने अभी अभी क्या संकेत किया? क्या बात है मुझको बतलाइए डाक्टर साहब।

गोकुल—कुछ भी तो नहीं, पुनीता।

पुनीता—(*उस रात की आँख के दाबने की बात याद करके*) आँख की कोरों के दाबने वालों को मैं जैसी खोटी खोटी सुनाया करती हूं वैसी ही सुना उठूंगी। फिर कहने लगते हैं मैं पागल हूं। साफ़ कहे देती हूँ मेरे ऊपर किसी का हक़ नहीं, किसी का अधिकार नहीं; किसी का हक़ नहीं, किसी का अधिकार नहीं।

गोकुल—(*उस रात के अपने नेत्र मीचने की क्रिया पर ग्लानि-ग्रस्त होकर*) मैं तो नहीं कहता कि मेरा कोई हक़ या अधिकार है।

डाक्टर—(*हँसते हुए*) अरी पुनीता, तुझको उस सिपाही—या हवालदार—की बात नहीं मालूम? सुनाता हूँ। हँसते हँसते हैरान होजायगी।

पुनीता—वह जो उस दिन स्टेशन पर दिखा था या और कोई? स्टेशन पर तो बहुत सिपाही और बड़े बड़े फ़ौजी अफ़सर नित्य आते हैं। जल्दी सुनाइए और फिर मेरी बात का उत्तर दीजिए। मैं टालमटोल नहीं करने दूंगी।

डाक्टर—पगली ही तो ठहरी—ज़रा धीरज धर। जब बेहोशी की हालत में तुम यहां लाई गई, और मैंने देख-परख की, तब तुम्हारे शरीर में मनुष्य का खून भेजने और मनुष्य की जीवित खाल घाव पर चढ़ाने की ज़रूरत पड़ी। उसी समय (*हँसते हुए*) एक मीडामल या भीडामल नाम का सिपाही आया। बोला, मैं खून दूँगा और इसके साथ शादी करूँगा। चमड़ा देने से उसने नाहीं की.........

पुनीता—(*तमककर*) मिट्टी का भदूना! गोबर का कण्डा!! काठ का ठूंठ!!! अपाहिज कोढ़ी!!!! मैं सचेत होती तो उसके गले को फाड़ डालती।

डाक्टर—(*ज़रा गम्भीरता के साथ*) क्रोध में मत आओ पुनीता, नहीं तो स्वस्थ होने में देर लगेगी और टहलने के लिए अभी कई दिन बाहर न जाने पाओगी। उसके बाद.......

पुनीता—फिर वह चला गया। खून किसने दिया? अपनी खाल किसने दी? हे राम!

(गोकुल आँख के इशारे से वर्जित करता है)

पुनीता—*(तीक्ष्णता के साथ)* फिर आँख चलाई! मैंने गाली देना सीखा है और बेभाव दे सकती हूँ।

डाक्टर—अब तक इनके मना करने से तुमको नहीं बतलाया गया। परन्तु कोई भी डाक्टर इतनी बड़ी बात को बहुत दिनों नहीं छिपा सकता। गोकुल ने ही तुम्हारे लिए अपना खून दिया और उन्होंने ही तुम्हारे घाव के लिए अपना चमड़ा।

पुनीता—*(यकायक बिस्तरों में बैठकर और विस्फारित लोचन से)* हे राम! हे भगवान!! यह क्या? यह क्या? इन्होंने दिया! इन्होंने दिया!!

(पुनीता बिस्तरों में गिर पड़ती है)

गोकुल—*(घबराकर)* डाक्टर साहब! डाक्टर साहब!! उसको बचाइए!!!

डाक्टर—*(ठण्डक के साथ)* घबराओ मत। यह अवस्था क्षणिक है। इसके उपरान्त वह बहुत वेग के साथ स्वास्थ्य लाभ करेगी।

[*डाक्टर पुनीता के चेहरे पर रूमाल से हवा करता है। कुछ क्षण बाद वह आंखें खोलती है और गोकुल की ओर टकटकी लगाकर देखती है। उसकी आंखों से आंसू बह निकलते हैं।*]

पुनीता—आगे कभी किसी को गाली नहीं दूँगी।

डाक्टर—*(स्नेह के साथ)* तो तेरा पेट कैसे भरेगा?

पुनीता—*(बहते हुए आंसुओं में मुस्कराहट के साथ)* हूँ—क्या मैं अपना पेट गालियों से भरती थी? *(हाथ से आंसू पोंछकर)* मैं तो

गाने से पेट भरती थी--और, और, अब भी भरूँगी। (*उदास स्वर में*) मेरी माँ मिल जाय मुझको, तो मुझे सब कुछ मिल गया।

डाक्टर—वह भी शायद मिल जाय। तू भाग्यवाली है। (*गोकुल से*) तुम्हारी मरहमपट्टी शाम को करूँगा। कोई जल्दी नहीं है।

गोकुल--कम्पाउण्डर कर जायगा, आप क्यों कष्ट करें!

डाक्टर—(*हँसते हुए*) तुम जैसे आवारों की मरहमपट्टी या मरम्मत डाक्टर को अपने ही हाथ से करनी चाहिए।

गोकुल—(*हँसता हुआ*) जो आज्ञा।

(*डाक्टर जाता है*)

पुनीता—याद है उस दिन मैंने आपको गाली दी थी!

गोकुल—किस दिन? दिन तो नहीं था, रात थी।

पुनीता—अब क्या दूं? गाली तो मेरे भीतर अब रही नहीं है। (*सांस छोड़कर*) मुझ भिखारिन के पास रक्खा ही क्या है देने को!

गोकुल—सङ्गीत तो है तुम्हारे भीतर।

पुनीता—भगवान को गीत-सङ्गीत से भले ही रिझालूँ, पर वे दिखलाई नहीं पड़ते, और आप सामने बैठे हैं।

गोकुल—कहीं चला जाऊँ?

पुनीता—अवश्य। मुझको भी बाहर घूमने-फिरने का सुभीता मिल जायगा। जा सकें तो जायँ।

गोकुल—अरे हां! याद आ गया!! डाक्टर ने मुझको तुम्हारे ऊपर एक अधिकार दिया है। मैं यहीं रहूँगा और तुमको बाहर न जाने दूँगा।

पुनीता—(*मुस्कराकर*) डाक्टर ने अधिकार दिया है? हूं। अच्छा, आप कभी मुझसे पागल तो नहीं कहेंगे?

गोकुल—बात कहो। वचन पीछे दूँगा।

पुनीता—(*हाथ जोड़कर*) मैंने उस दिन आपको गाली दी थी। कठोर बातें कही थीं। क्या आप इस भिखारिन को क्षमा की भीख देंगे!

गोकुल—(*खड़े होकर और हाथ जोड़कर*) पुनीता, मैं तुमसे कहीं बढ़कर दरिद्र हूं। आवारा और निकम्मा। मैं आज लाज के मारे गड़ा जा रहा हूं। क्या किसी भले घराने के लड़के को उस तरह आँख दबानी चाहिए थी? मेरे उस बेहूदेपन का कोई प्रायश्चित्त नहीं है। क्या तुम मुझको क्षमा कर सकोगी? मैं तुमसे भीख मांगता हूँ।

पुनीता—यह मत करो, नहीं तो मैं फिर कोई पागलपन कर बैठूंगी। (*मुस्कराकर*) अभी बिलकुल अच्छी नहीं हूं, अच्छे होने पर गाने पर गाने सुनाउँगी, तब समझूँगी आपने क्षमा कर दिया।

गोकुल—और जब तुम मेरे जीवन को सङ्गीत से भर दोगी तब समझूँगा कि तुमने मुझको क्षमा कर दिया।

पुनीता—मैं समझी नहीं।

गोकुल—स्वस्थ होने पर समझाऊँगा।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान--अस्पताल की इमारत के बाहर का अहाता। समय प्रातःकाल के कुछ बाद। लकड़ी टेकती हुई अन्धी बुढ़िया आती है। उसके कपड़ों की दशा अब और भी अधिक फटियल है। वह दुर्बल भी ज्यादा है।]

बुढ़िया—क्या अस्पताल यही है? बड़े डाक्टर साहब का अस्पताल क्या यही है?

(उत्तर की प्रतीक्षा करती है। कोई उत्तर नहीं पाती)

बुढ़िया—बोलो कोई माई के लाल। बोलो। अन्धी बुढ़िया बुला रही है। गाने वाली बुढ़िया। भूखी टूटी बुढ़िया। बोलो, कोई बोलो।

(अस्पताल का एक नौकर आता है)

नौकर—क्यों हल्ला मचा रक्खा है? भाग यहां से।

बुढ़िया—मालिक, मैं गरीब हूं। मेरा कोई नहीं है। ढूंढ़ते ढूंढ़ते न जानें कितने दिन में आ पाई हूँ यहां।

नौकर- हां, यहां रक्खा है सदाबर्त तुम्हारे लिए! जा, भाग। नहीं तो दूँ दो धक्के?

बुढ़िया—हे भगवान, मैं मर क्यों न गई ?

नौकर—तो यहां क्या ज़हर खाने आई है ? यह भीख मांगने की जगह नहीं है। जा यहां से, किसी रोगी को कोई छूत की बीमारी न दे जाना।

(बुढ़िया बैठ जाती है)

बुढ़िया—थक गई हूँ, मालिक। एक बहुत भले थे, वे यहां का रास्ता बतला गए। एक तुम हो जो पल भर ठहरने भी नहीं देते।

नौकर—कौन गधा कर गया तुझे यहां ? यह अस्पताल है, अस्पताल। यहां भीख नहीं मिलती। यहां रोगियों का इलाज होता है, सो तेरी तो उमर इतनी हो गई है कि यमदूत ही इलाज करेंगे। जा यहां से परमेसरी, साहब देख लेंगे तो मेरी तेरी दोनों की आफ़त आ जायगी।

बुढ़िया—बड़ा अस्पताल यही है, मालिक ?

नौकर—और नहीं तो क्या छोटा अस्पताल है ?

बुढ़िया—तुम्हारा भला करें भगवान। गाड़ियों की टक्कर के घायल क्या यहीं आए हैं ?

नौकर—क्या करेगी उनका ?

बुढ़िया—क्या तुम मुझको नहीं पहिचानते ?

नौकर—ओ हो ! यह आई कहीं की लखपतिन ! *(बुढ़िया के स्वर की नकल करके)* क्या तुम मुझको नहीं पहिचानते ? तेरी तो तस्वीर टंगी होगी घर घर में ! टलेगी या नहीं यहां से ?

बुढ़िया—*(निश्वास छोड़कर)* कभी मेरी तस्वीर भी खींची गई थी। *(घिघयाकर)* मालिक क्या वे सब घायल अच्छे होकर चले गए ?

नौकर—हां, बहुत से तो बिना कुछ लिए दिए ही। तू उनसे मांग जांच करने के लिए आई है क्या ? जाती है कि अब आऊं सिर पर ?

बुढ़िया—एक लड़की आई मालिक यहां ? वह कुछ पगली सी है। अच्छा गाती है और देखने में बिलकुल गौरा पार्वती जैसी है। वह मेरी लड़की है । मैं उसी को देखने आई हूँ। भगवान तुम्हारा भला करें, मुझको बतला दो।

नौकर—ऐसी तो कई आईं थीं, पर यह नहीं मालूम कि उनमें कोई पागल भी थी या नहीं। एक तो कई दिन हुए जब चली गई। तुम्हारी लड़की तो हो नहीं सकती थी वह। और किसी का हाल मुझको मालूम नहीं, क्योंकि स्त्रियों का खण्ड अलग है।

बुढ़िया—कहां है वह खण्ड ? मुझको रास्ता बतलादो मालिक। मैं तुमको असीस दूंगी।

नौकर—हाय, हाय ! जान ही खा गई यह तो। धीरज के साथ इतनी बातें करलीं सो उसका फल यह हुआ कि अब तुमको रास्ते बतलाता फिरूं। जा बाहर, किसी से पूछ लेना। इतने बतलाने वाले तो फिरते हैं मारे मारे।

(डाक्टर आता है)

डाक्टर—क्या रौरा मचा रक्खा है ?

नौकर—(*सकपकाकर*) हुजूर, यह बुढ़िया न जाने कहां से यहां आ मरी है। इससे कह रहा हूँ यहां से चली जा। परन्तु बासी हत्या की तरह अड़ी हुई है। टलने का नाम ही नहीं लेती है। कहती है यहां कोई पागल या घायल लड़कियां आई हैं दवादारू के लिए ?

डाक्टर—क्या है बुढ़िया ?

बुढ़िया—दीनबन्धु, बड़ा अस्पताल यही है क्या ?

डाक्टर—हां, हां है।

बुढ़िया—बड़े डाक्टर सरकार ही हैं या कोई और ?

डाक्टर—बड़ा छोटा कुछ सही, मतलब बतला।

बुढ़िया—लोगो ने बतलाया है कि सरकार मेरी घायल लड़की यहीं लाई गई। आपके बच्चे हज़ार बरस जिएं, उसी को देखने आई हूं। कहां है वह ?

(डाक्टर उसको निकट आकर देखता है)

डाक्टर—तू वही बुढ़िया है जो स्टेशन पर गीत गाकर भीख मांगती रही है ?

बुढ़िया—*(प्रसन्न होकर)* हां सरकार वही हूं मैं, आपने पहिचान लिया न ?

डाक्टर—बहुत दिन हुए जब तुझको देखा था। कहां तक पहिचान रखता......

बुढ़िया—आपने मेरे साथ मेरी लड़की को भी देखा होगा। *(उत्सुकता के साथ)* देखा था न ?

डाक्टर—*(मुस्कराकर)* अच्छा, फिर ?

बुढ़िया—मैं और वह दोनों उस रात गाड़ी से झांसी जा रहे थे। गाड़ियां लड़ गईं। मैं बच गई। मांगते खाते यहां तक आगई। सुना है मेरी पुनियां घायल होकर यहां आई है, और उसका इलाज होरहा है।

डाक्टर—पुनियां ? हां पुनियां या पुनीता इसी अस्पताल में है...

(बुढ़िया एकदम खड़ी हो जाती है)

बुढ़िया—दीनबन्धु, मालिक, आपका घर नाती पोतों से भर जाय। भगवान आपको राज देवें। किस जगह है मेरी पुनियां ? कैसे है वह ? अच्छी तरह है न ? मेरे लिए रोती बिलखती तो नहीं है ?

डाक्टर—वह अच्छी हो गई है। निर्बल है।

बुढ़िया—डाक्टर साहब, मैं उसको बिलकुल अच्छा कर लूंगी। मुझको उसके पास भिजवा दीजिए। भगवान आपको सुखी रक्खें, निहाल करदें।

डाक्टर—ऐसे नहीं जा सकती हो। तुम बहुत गन्दे कपड़े पहिने हो। रोगियों को इन कपड़ों से कोई छूत की बीमारी लग जायगी।

नौकर—यही बात मैंने कही थी इससे, हुजूर......

डाक्टर—चुप ! *(बुढ़िया से)* तुमको नहाना पड़ेगा, कपड़े बदलने पड़ेंगे—एक पूरी बीमारी तो तुम खुद हो।

बुढ़िया—*(घिघियाकर)* डाक्टर साहब, नहा तो मैं लूंगी, पर कपड़े मेरे पास कहां रक्खे हैं ? मेरी बेटी को मुझे दूर से ही बतला दीजिए। मै उसके बहुत नज़दीक नहीं जाऊंगी या, थोड़ी देर के लिए यहीं भेज दीजिए।

डाक्टर—*(हँसकर)* हां, नहाने बहाने की झल्लत में कौन पड़े। अच्छा, चल। हम तुझे कपड़ा भी देंगे। खाना भी।

बुढ़िया—*(हर्षमग्न होकर)* भगवान भला करें। ऐसे ऐसे दाता भी संसार में हैं।

डाक्टर—*(नौकर से)* पकड़ो इसकी लकड़ी और ले चलो इसको।

नौकर—बहुत अच्छा, हुजूर।

(नौकर बुढ़िया की लकड़ी पकड़ता है)

नौकर—आओ बुड्ढी माई।

बुढ़िया—*(बहुत प्रसन्न होकर)* जय होय, जय होय। बुड्ढी माई !!! ह ! ह ! ह ! ह ! ह !

(आगे आगे डाक्टर, पीछे पीछे नौकर बुढ़िया को लेकर जाता है।)

दूसरा दृश्य

[स्थान—अस्पताल के भीतर का एक कमरा। इस कमरे में और किसी रोगी का बिस्तर नहीं है, पुनीता पलङ्ग पर पड़ी है.

अन्धी बुढ़िया पास बैठी है। वह स्वस्थ हो गई है, परन्तु अभी निर्बल है। डाक्टर के आदेश के कारण बिस्तरों में पड़ी हुई है। वैसे थोड़ासा चलने फिरने योग्य हो गई है। समय—दोपहर के उपरान्त।]

पुनीता—माँ, तुमने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाए हैं......

बुढ़िया—अरी तो अब कितनी बार कहेगी ? यह क्यों नहीं कहती कि मेरे भाग्य से तू बच गई ? मैं कहती हूं मुझको चोट आ जाती और तुझको कुछ भी न होता तो बहुत अच्छा रहता। पर मुझको तो कुछ हुआ ही नहीं। एक गड्ढे में पड़ गई। जब कुछ चेत आया तो हल्लागुल्ला सुनाई पड़ा। मैंने सोचा कहीं रेल वाले इञ्जन में न झोंक दें। मैं लुढ़कते-पुढ़कते न जाने कहाँ पहुंची।

पुनीता—और जब सवेरा हुआ तब अपने को एक गाँव में पाया।

बुढ़िया—नहीं, वैसे ही नहीं पहुंच गई। सवेरा होने पर खेत वालों की आवाज़ सुनाई दी। मैं रोई-चिल्लाई। वे लोग आ गए और मुझको गाँव में ले गए।

पुनीता—कितनी मुश्किलों से आ पाई हो माँ तुम !

बुढ़िया—हां, एक गाँव से दूसरे गाँव के लिए आसरा पाती हुई चली गई, इसलिए आगई। एक तो अन्धी, दूसरे बुड्ढी, शरीर में बल नहीं, पर भगवान ने भेज दिया किसी तरह यहां तक ! आगे कभी रेल में नहीं बैठूंगी।

पुनीता—(*हँसकर*) रोज़ थोड़े ही गाड़ियाँ लड़ती हैं, माँ।

बुढ़िया—क्या ठीक है—तुझको कभी अकेली नहीं छोड़ूंगी।

पुनीता—मुझको तो जैसे प्राण से मिल गए। तुमने मेरे लिए बहुत कष्ट उठाए हैं। (*गद्गद् हो जाती है*)

बुढ़िया—फिर वही !

पुनीता—और डाक्टर साहब ने बहुत कृपा की है माँ। बहुत अच्छे हैं। बड़े भले हैं।

बुढ़िया—उन्होंने तुझको बढ़िया से बढ़िया और एक से एक अनमोल दवाइयां दी हैं। भगवान उनकी बेल को सदा हरा रक्खे। फूलें फलें।

पुनीता—केवल दवाइयों से क्या होता मां? उन्होंने खून की पिचकारियां लगाईं! एक का ज़िन्दा चमड़ा काटकर लगाया!!

बुढ़िया—ऐं! खून की पिचकारियां!! ज़िन्दा चमड़ा काटकर चिपकाया!!! किसका खून? किसका चमड़ा? यह सब क्या कहानी है पुनियां? तू क्या मुझको बिलकुल मूर्ख समझती है? समझती होगी मैं सठिया गई हूँ! परन्तु असल में मेरी उमर इतनी नहीं है जितनी दिखलाई पड़ती हूँ। चिन्ता और दुख ने मुझको ऐसा कर दिया है—पर, जाने दे। अपना खून और खाल बेचने वाले लोग भी पैदा हो गए हैं क्या? हे राम, कैसा युग आगया है! किसी जानवर का खून तो नहीं भर दिया? या किसी बन्दर की खाल? डाक्टर लोग भी क्या क्या करने लग गए हैं!

पुनीता—नहीं मां, खून या खाल कोई बेचता नहीं है। एक बिचारे बड़े अच्छे हैं। उन्होंने दिया खून और खाल.......

बुढ़िया—हां, हां—मुझको बनाती जा! किसने किया यह सब? कौन है वह? कहां है?

पुनीता—हैं एक। कभी कभी आ बैठते हैं यहां।

बुढ़िया—यहां आ बैठते हैं! तेरे पास!!

पुनीता—अरी नहीं, कभी एकाध बार डाक्टर साहब के साथ आए हैं।

बुढ़िया—कोई ठग होगा, ठग। खून दिया उसने और खाल दी! तेरी आँखों के सामने दिया?

पुनीता—नहीं तो, मुझको तो चेत ही नहीं था।

बुढ़िया—उसी ठग ने कहा होगा तुझसे ? बतला किसने कहा ?

पुनीता—नहीं—नहीं—किसी ने नहीं कहा। कहती हूँ यहीं अस्पताल में किसी से सुन लिया था।

बुढ़िया—वह तुझसे कोई बात करता है ?

पुनीता—नहीं तो। कोई खास बात तो नहीं करता।

बुढ़िया—तुझको पैसे दिए उसने ?

पुनीता—अरी नहीं। न मैं यहां गा पाती हूँ और न कोई पैसे देता है।

बुढ़िया—मुफ्त में कोई नहीं देता। बड़े आदमी जो देने का ढोंग करते हैं तुरन्त ही कैसा कह देते हैं—जा यहां से ! भाग यहां से !! जान खा गई !!! खोपड़ा चाट गई !!!! बिना गाना सुनाए लिया कभी किसी से कुछ तू ही बतला ?

पुनीता—कभी नहीं।

बुढ़िया—ये बिना मिहनत के पैसे वाले, ये दूसरों का खून चूसकर अपना पेट बढ़ाने वाले क्या कभी पसीजते हैं ?

पुनीता—नहीं पसीजते हैं, नहीं पसीजते हैं; पर, तुम अपने को दुखी क्यों कर रही हो ?

बुढ़िया—तो मुझको यह बतला—जब वह यहां आता है तब तू उसको एकाध गाली देती है या नहीं ?

पुनीता—गाली दूँ ! तुमको क्या हो गया है, मां ? भलाई का बदला बुराई से दूं ! मैंने तो प्रण कर लिया है अब गाली नहीं दूँगी।

बुढ़िया—गाली नहीं देगी ! क्या अपने सत्यानास को पास बुला रही है ? जब तक तू कांटेदार बनी रहेगी कोई तुझे छू भी नहीं सकेगा। यदि

हलुआ सरीखी मुलायम बन गई तो किसी दिन चट कर ली जायगी। हे भगवान ! हे राम !! हे राम !!!

पुनीता—(*कुढ़कर*) व्यर्थ हैरान हो रही हो। मैंने ऐसा प्रण थोड़ा ही किया है कि चाहे कोई कुछ कहले और मुँह को सिए बैठी रहूँ। ऐसी सुनाऊँ, ऐसी सुनाऊँ कि सुनने वाले के पुरखे कांप जायं।

बुढ़िया—हां, बेटी, तभी हम लोगों की गुज़र हो सकेगी। मैंने संसार को बहुत भुगता है। तू तो जानती ही है। (*स्नेह के साथ*) बेटी, ठीक बतलाना किसी ने सचमुच तेरे लिए खाल और खून दिया है ?

पुनीता—(*सतर्कता के साथ*) सुना है मैंने। दिया अवश्य है किसी ने।

बुढ़िया—अच्छा, वह जो यहां कभी कभी आ बैठता है, कोई ऐसी वैसी—घटबढ़—प्यार व्यार की बात तो नहीं कहता ?

पुनीता—तुमको क्या हो गया है, मां ? क्या बके जा रही हो ? तुम समझती हो संसार में सब एक से ही हैं ?

बुढ़िया—हुं—अब मैं तेरे साथ रहूँगी—बिलकुल साथ। हूँ।

तीसरा दृश्य

[स्थान—बगीचे का एक भाग। समय सन्ध्या। पुनीता और गोकुल आते हैं। पुनीता स्वस्थ हो गई है। गोकुल भी। पुनीता फटे कपड़े नहीं पहिने है, परन्तु सादे हैं। गोकुल अपने वस्त्र में एक फूल लगाए है]

पुनीता—मां आ गई हैं, अब मेरे बराबर कोई सुखी नहीं। अब मैं खूब गा सकती हूँ। नाच भी सकती हूँ। बगीचे में सांझ कितना सोना बरसा रही है !

गोकुल—तुम जितना सोना बरसा सकती हो उतना बिचारी सांझ नहीं बरसा सकती।

पुनीता—मैं सोने से अधिक लोहा बरसा सकती हूँ।

गोकुल—दोनों के समन्वय से ही जीवन खिलता है।

पुनीता—उदास कैसे हैं आप आज? मैं आपकी बात नहीं समझी! क्या कहा? उस दिन भी कुछ इसी तरह की बात कही थी। कहते थे समझाऊँगा। अब समझाइए।

गोकुल—तुमने गाने पर गाने सुनाने को कहा था। सुनाओ तो मैं समझाऊँगा।

पुनीता—अच्छा। परन्तु अभी एक ही गाना सुनाऊँगी। सबके सब एक साथ सुना दूँगी तो आप कहेंगे, आगे के लिए तुम्हारे पास और क्या है? तब क्या करूँगी?

गोकुल—(*हँसकर*) अच्छा एक ही सुनादो।

पुनीता—फिर दूसरे के लिए हठ मत करना।

(*पुनीता गाती है*)

गीत

झुरमुट में से झरी सुरसरी;
कंकड़ पत्थर से टकराकर आभा पाई,
गिरि पर्वत को रेत रेतकर बाहर आई,
फिर मिला रम्य विस्तार,
बज उठे बीन के तार,
बह उठी ठुमककर मोद भरी,
झुरमुट में से झरी सुरसरी;

गोकुल—(*उदास होकर*) दूसरा गीत कब सुनाओगी?

पुनीता—मुझको बहुत से याद हैं। गिनती नहीं बतलाऊँगी। अच्छा—अच्छा, बतलाए देती हूँ। मुझको पन्द्रह बीस याद हैं। देखिए, हैं न बहुत से ? दो दो गीत नित्य सुनाऊँ तो आठ दस दिन लग जायंगे।

गोकुल—तुम यहां से कहां जाओगी, पुनीता ?

पुनीता—अब और कहां जाऊँगी ? सवाल है आप कहां जायंगे ? कब जायंगे ? क्या आप चले जायंगे ? फिर नित्य गाना किसको सुनाऊँगी ?

गोकुल—(*रुद्ध कंठ से*) अच्छा एक गीत और सुनाओ पुनीता।

पुनीता—गीत तो सुना दूँगी, क्योंकि एक दिनमें दो गानें सुनाने का मैंने वचन हारा है, पर आपका गला क्यों भर आया है ?

गोकुल—तुम अब किसी को कभी गाली नहीं दोगी ?

पुनीता—कभी नहीं। क्यों आपको क्या सन्देह है ? आपने क्या मुझको अभी तक क्षमा नही किया ?

गोकुल—मैं तो उस बात को भूल ही गया हूं।

पुनीता—(*सोचकर*) नहीं, मां कहा करती हैं कि बांस से फाँस बुरी होती है। फाँस कसकती रहती है।

गोकुल—क्या तुम्हारे मनमें भी कुछ कसक रहा है ?

पुनीता—नहीं तो। मुझको तो आपकी उस आंख पर हँसी आती है। ह ! ह !! ह !!! ह !!!!

गोकुल—और मुझको उसके स्मरण से लज्जा। सब बड़ों छोटों के जीवन में बांस और फाँसें आती हैं ! फाँस को फाँस से निकाल देना पड़ता है। मेरे मनमें कोई कसक नहीं रही। तुम कुछ पढ़ी लिखी हो पुनीता ?

पुनीता—छुटपन में थोड़ा सा पढ़ा है। पिता का देहान्त हो गया। कुछ दिनों बाद मां की आंखें जाती रहीं। मां अधिक पढ़ी लिखी हैं। घर द्वार बेचने के बाद गांठ में कुछ न रहा। समाज ने मेरी मां के स्वभाव

को सहन नहीं किया। उनपर लांछन लगाए। हम लोग भीख मांगने पर निकल पड़ीं। मैंने छुटपन में गाना सीखा था। इसलिए गा गाकर पेट पालने लगीं। इसको चाहे भीख मांगना कह लीजिए।

गोकुल—इसको भीख मांगना नहीं कह सकते। यह तो मज़दूरी है जिससे बढ़कर संसार में और कुछ श्रेष्ठ है ही नहीं। जिस मुफ़्तख़ोरी को अमीरी कहते हैं वह असल में भीख मांगने से भी बुरी है।

पुनीता—(*मुस्कराकर*) कुछ इस तरह की बातें मैं भी स्टेशन पर लोगों को कहते सुनती आ रही हूं। परन्तु ग़रीबी के कांटों की चुभन को वे लोग ठीक ठीक नहीं जानते। आप ग़रीब नहीं हैं। आप भी नहीं जानते होंगे।

गोकुल—शायद मैं जानता हूं। अच्छा, अब एक गीत और सुनादो।

पुनीता—आपने यह नहीं बतलाया कि कब जायंगे और कहां जायंगे?

गोकुल—मैं चला जाऊंगा तो क्या तुमको कुछ बुरा लगेगा?

पुनीता—हां, शायद कुछ। मां न होतीं तो बहुत बुरा लगता।

गोकुल—तुम उसी तरह से गाती फिरोगी?

पुनीता—क्यों उसमें बुरा क्या है? अभी अभी आपने कहा था कि संसार में उससे बढ़कर श्रेष्ठ और कुछ है हो नहीं—मज़दूरी से बढ़कर।

गोकुल—(*हँसकर*) मैं तुम्हारे भोलेपन से हार गया पुनीता।

पुनीता—क्यों, मैंने ऐसा क्या कहा?

गोकुल—(*साहस बटोरकर*) पुनीता, बुरा न मानो तो एक बात कहूं? मुझको कहते डर लगता है।

पुनीता—कहिए, कहिए। मैं कोई भी गाली नहीं दूंगी।

गोकुल—मैं तुमको इस तरह अकेली नहीं छोड़ना चाहता—मैं सदा तुम्हारे पास रहना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी जीवन सङ्गिनी बन सकोगी?

पुनीता—(*आँख चढ़ाकर क्षुब्ध स्वर में*) क्या वेश्या की तरह?

गोकुल—(*दृढ़ता के साथ*) नहीं, पत्नी बनकर। विवाहिता होकर।

पुनीता—(*मुँह फेरकर*) मैं क्या उत्तर दे सकती हूँ? मेरी मां ही इस बात का निर्णय कर सकती हैं।

गोकुल—तुमको तो नाहीं नहीं है?

पुनीता—(*मुँह नीचा करके*) मैं क्या कहूँ?

गोकुल—(*प्रसन्न होकर*) अब मुझको विश्वास होगया है कि मनसे फांस निकल गई। अब बतलाऊं तुम मेरे जीवन को सङ्गीत से किस तरह भरोगी?

पुनीता—(*ज़रा सा सिर उठाकर, मुस्कराते हुए और दूसरी ओर देखते हुए*) क्या—किस तरह?

गोकुल—एक गाना सुनाओ तो बतला दूंगा।

पुनीता—मां कहां होंगी? सुनेंगी तो क्या कहेंगी?

गोकुल—पहले भी तो सुनाया था। अब सुना दो।

पुनीता—(*हँसकर*) अच्छा, अच्छा, गाती हूँ। मां तो दूर हैं।

(*पुनीता गाती है*)

गीत

उस दिन जब नभसे बरसे थे;
क्यों बरसे थे? क्यों बरसे थे?
रूखी सूखी थी फुलवारी,
नीरस थी जीवन की क्यारी;
देख लिया तुमने ऊपर से,
उस दिन जब नभ से बरसे थे;
क्यों बरसे थे? क्यों बरसे थे?

गोकुल—तुम्हारे स्वरों में मेरे मन की बीन को झंकार दे दी है। तुम और तुम्हारे स्वर दोनों मेरे हृदय में बस गए हैं। तुम मेरे हृदय की देवी हो।

(अन्धी बुढ़िया नेपथ्य से चिल्लाती है)

बुढ़िया—किससे बातें कर रही है पुनियां। मैं गिरते पड़ते यहां तक आ पाई हूँ, मुझको लिवा जा।

पुनीता—आई मां।

गोकुल—मैं यहीं खड़ा हूं। *(पुनीता शीघ्रता के साथ जाती है)*

(गोकुल गुनगुनाता है। पुनीता अन्धी बुढ़िया को लेकर आती है। बुढ़िया हाथ मे लकड़ी लिए है। कपड़े साफ़ पहिने है।)

बुढ़िया—कहां हैं वह? कौन है वह?

गोकुल—यह रहा मां जी मैं।

बुढ़िया—*(क्रुद्ध स्वर में)* क्या कह रहे थे—तुम्हारे स्वरों ने मेरे मन की बीन को झंकार दे दी है! तुम मेरे हृदय में बस गई हो!! तुम मेरे हृदय की देवी हो!!! निपूते! कोढ़ी!! मुँहजले!!! मेरे आधार को मुझसे छीनना चाहता है? *(लाठी उबारती है)*

पुनीता—*(लाठी को पकड़ कर)* वे ऐसे नहीं हैं। गाली मत दो, मां।

बुढ़िया—छोड़ मुझको! आई कहीं की!! वे ऐसे नहीं हैं!!!

पुनीता—इन्होंने ही मेरे लिए अपना रक्त दिया था, खाल दी थी। मेरी जान बचाई और अब इज़्ज़त बचायंगे, मां।

बुढ़िया—*(क्रोध के मारे थर थर कांपकर और रुद्ध कण्ठ से)* जब अपना ही दाम खोटा हो तो परखैया को क्या दोष दिया जाय? पुनियां, तू इस दुष्ट संसारको नहीं जानती। तू जब गाली बकती थ। तब भली थी।

इस गुण्डे के बहकावे में आ गई ! हाय, मेरा भाग्य फूट गया !! कितना समझाया न मानी !!!

पुनीता—मां, धीरज धरो। वे गुण्डे नहीं हैं। भले घराने के पढ़े लिखे लड़के हैं।

बुढ़िया—(*और भी रुद्ध स्वर में*) मैंने बहुत से ऐसे पढ़े लिखे देखे हैं। एक से एक बढ़कर क्रूर और छली। छोड़ इसको और चल मेरे साथ। चल अभी।

(*पुनीता गोकुल को कुछ बोलने का संकेत करती है और संकेत में बतलाती है कि कहदे, 'हम लोगों को सदा साथ ही रहना हैं, कभी अलग न होंगे।'*)

गोकुल—मां जी, आपकी लाठी के लिए मेरा सिर हाज़िर है। मैं ईश्वर को बीच में करके कहता हूँ कि गुण्डा या छलिया नहीं हूँ। मैं आपकी सदा सेवा करना चाहता हूं।

बुढ़िया—(*कुछ ही ठण्डी पड़कर*) हूं—हूँ। इस तरह की बोली मैं अपने जीवन में कई बार सुन चुकी हू।

(*पुनीता गोकुल के उस कहने के ढंग से असन्तुष्ट होती है और स्पष्ट बात कह डालने का संकेत करती है*)

गोकुल—मां जी, मेरे माता पिता जीवित हैं। उनका मुझ पर अटूट प्रेम है। वे मेरे सुख में कभी बाधक न होंगे। उनका आशीर्वाद मुझको प्राप्त हो जायगा। मैं कालेज की ऊंची शिक्षा प्राप्त हूं।

पुनीता—(*क्षुब्ध होकर*) उँह......

गोकुल—(*ज़रा विचलित होकर*) मैं मन लगाकर सब काम काज किया करूंगा। जीवन के मार्ग पर संभल कर चलूंगा। आप लोगों को कभी कोई शिकायत न होगी। मैं मज़दूरी की कमाई से घर भरूंगा। मैं......

बुढ़िया—बेहया कहीं का। चल बेटी। हम लोग......

पुनीता—ठहरो मां। ये पढ़े लिखे मूर्ख हैं......

गोकुल—मैं मूर्ख नहीं हूं मां। असल बात यह है कि मेरे माता पिता मेरे बिलकुल विरुद्ध नहीं हैं। वे पूरा स्वागत करेंगे......

पुनीता—मैं मां तुमको बतलाती हूँ। ये विवाह करेंगे। इनके माता पिता का आशीर्वाद . ...

बुढ़िया—(*व्यङ्ग की हँसी हँसती हुई*) तेरे साथ विवाह करेंगे ! विवाह करेंगे !! विवाह करेंगे !!!

गोकुल—(*दृढ़ता के साथ*) हां, मां। मैं संकोच के मारे नहीं कह पा रहा था। मैं विवाह करूँगा।

बुढ़िया—क्या मुझको ठीक ठीक सुनाई पड़ रहा है ? पुनियाँ, क्या तेरे भाग्य में सुख लिखा है ? आ मेरी बेटी। (*लिपट जाती है*) और, इस लड़के को तो देखूँ ? कहां है ? इधर तो आ रे। (*गोकुल धीरे से आगे बढ़ता है। बुढ़िया उसके कन्धे और चेहरे पर हाथ फेरती है और प्रसन्न होती है*) तू जुग जुग जिए बेटा। गाड़ियों की लड़ाई से भगवान ने मुझको इसी घड़ी के लिए बचाया। (*गोकुल के सिर को अपने कन्धे से लगा लेती है। गोकुल सिर को हटा लेता है।*)

गोकुल—(*हँसकर*) मां, आपकी लाठी ने तो मेरा कचूमर ही निकाल दिया होता।

बुढ़िया—मेरी पुनियां ने बचा लिया न ? वह बड़ी चतुर है। बड़ी बुद्धिमती। भगवन्, उसने कितने कष्ट सहे हैं। राम, तुम बहुत बड़े हो। दुखियों का निवारण करने वाले, बहुत बड़े दाता। आज मेरी आंखें होतीं तो कितना जी भरकर देखती ! अपने को कितना जुड़ाती !!

पुनीता—मां, अब चलो न यहां से ?

बुढ़िया—हां, हां, चलती तो हूँ। पुनियां, देख मेरी धोती के एक छोर में कुछ रुपए बँधे हैं। मैं वे रुपए दहेज़ में दूँगी।

गोकुल—दहेज़! मेरे माता-पिता दहेज़ में मुझे आपको दे देंगे। आप मुझको ब्याज समेत उनके हवाले कर देना।

बुढ़िया—पुनियां, तू कहती थी यह मूर्ख है! यह तो बड़ा बातूनी है। बड़ा होशियार जान पड़ता है। *(कुछ सोचकर)* क्या तुम्हारे माता-पिता एक भिखारिन, अन्धी बुढ़िया की लड़की के साथ अपने पढ़े-लिखे बेटे का सम्बन्ध स्वीकार करेंगे? *(गोकुल उसकी लाठी थाम लेता है)*

गोकुल—अवश्य।

बुढ़िया—*(गद्‌गद् होकर)* बेटा, हम लोगों ने बहुत अच्छा समय देखा है। परन्तु--परन्तु—खैर, उन सब बातों में अब क्या रक्खा है? मैं अपने पड़ोसियों को या किसी को भी गाली नहीं देना चाहती। *(पुनीता से)* पुनियां, तू मेरे साथ ही रहना अभी। तू मुझे ले चल। *(वे दोनों उसकी लाठी को थाम लेते हैं)*

(डाक्टर आता है)

डाक्टर—मैं हैरान था। यह सब गाना, फिर शोर, और उस पर यह सब मिठबोली, कहां और क्यों हो रही है। बुढ़ी मां, यहां तुम कैसे आ पहुंची?

पुनीता—डाक्टर साहब हैं, मां, डाक्टर साहब।

बुढ़िया—डाक्टर साहब! डाक्टर साहब!! मेरी पुनियां को जीवन देने वाले डाक्टर साहब!!! तुम्हारा बेटा जिए। फूलो-फलो डाक्टर साहब। आपकी जय हो।

पुनीता—डाक्टर साहब बड़े सज्जन हैं।

बुढ़िया—हां, हां, अवश्य हैं। डाक्टर साहब, यह मेरा होने वाला दामाद है। अच्छा है। है न डाक्टर साहब?

डाक्टर—बहुत अच्छा है। बड़ा पुरुषार्थी है। बहुत होनहार है। (*हँसकर*) मैं पहले ही समझ गया था। तभी कहा था मैंने—पुनीता, तुम्हारे ऊपर इसका हक़ और अधिकार है।

(*पुनीता सिर नवा लेती है*)

बुढ़िया—डाक्टर साहब, मैंने पैसों के लिए बहुत गाया है। आज आपके आशीर्वाद के लिए गाऊँगी। गा, पुनियां।

पुनीता—मैं नहीं गाऊँगी।

बुढ़िया—तो मैं ही गाती हूँ। (*बुढ़िया गाती है*)

गीत

दुखियों की सुनते रहते हो,
मनही मन गुनते रहते हो;
प्राण कंठगत जब हो जाता,
विपद प्रवाह वेग पर आता,
तभी अचानक ढुर जाते हो;
दुखियों की सुनते रहते हो,
मनही मन गुनते रहते हो।

(*यवनिका*)

। इति ।

वर्मा जी की अनुपम कृति जो युग-युग तक हिन्दी में सौरभ, प्राण और ओज बनाये रहेगी।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई।

हिन्दी उपन्यासों में सर्वथा सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ जिसका मराठी, गुजराती, सिंधी, तैलगू तथा उर्दू में अनुवाद हो रहा है।

* कुछ सम्मतियां *

(१) प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस–चान्सलर पब्लिक सर्विस कमीशन के चेयरमैन डा० श्री अमरनाथ जी झा— "झांसी की रानी मैंने आद्योपांत पढ़ी और उससे बहुत प्रभावित हुआ। ऐतिहासिक उपन्यासों में इसका सर्वोच्च स्थान है। अनुसन्धान में बहुत परिश्रम लगा होगा। बातचीत की भाषा स्वाभाविक और अकृतिम है। चरित्र–चित्रण में तो श्री वृन्दावनलाल जी सिद्धहस्त हैं।"

(२) श्री मैथिलीशरण जी गुप्त— "इस उपन्यास के रूप में मेरे बन्धु ने महारानी का ऐसा स्मारक बनाया है जो कि स्थान विशेष पर नहीं प्रत्येक घर में प्रतिष्ठित हो सकता है। पराधीनता को स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करने वाली अपनी इस स्वाधीनता की सजीव मूर्ति के दर्शनार्थ मैं प्रत्येक हिन्दी–प्रेमी से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता हूँ।"

(३) दानवीर घनश्यामदास जी बिड़ला— "जितने हिन्दी के उपन्यास मैंने पढ़े हैं उनमें यह सर्वोच्चकोटि का है।"

(४) श्री रामकुमार वर्मा एम०ए०पी०एच०डी० प्रयाग विश्वविद्यालय— "झांसी की रानी उपन्यास आंखें गड़ा गड़ा कर पढ़ा। यह ऐसा रुचा कि खाने पीने तक की भी सुधि न रही। ऐतिहासिक तथ्य और कल्पना के सम्मिश्रण से यह उपन्यास ऐसा रुचा है कि आंखों के सामने तस्वीर सी खींच दी है। लक्ष्मीबाई पढ़के पहिले तो बाहें फड़कने लगीं, फिर आंखों से नीर बहने लगा।"

Under Translation Into Marathi, Gujrati, Telgu, Sindhi and Urdu.

Some Opinions.

Amrit Bazar Patrika:—Indeed one sometimes ibegins to feel embarrased when one thinks that many sister languages of our National language can throw a serious challange to Hindi in the field of fiction. Happily Mr Vrindawan Lal Varma has been keeping the banner high in fiction for a long time now Jhansi-ki-Rani Laxmi bai may well be the crowning glory of the author's work in the field of literature. No literature in India has such a valuable contribution in the field of fiction. It will be a lasting tribute to Mr. Varma's craft as a historical novelist.

N. C. Mehta Retired I. C. S. The great Art Critic of India:—I have found Jhansi-ki-Rani Laxmibai exceedingly well written.

Doctor Shyama Prasad Mukerji Ex-President Hindu Mahasabha:— A grand theme handled in a remarkable manner

Sind Observer: The best historical novel so far composed in Hindi. The book makes a fascinating reading and would compare favourably with the best historical novels by European authors

Independent Nagpur:—The book deserves to be translated into all ndian languages as well as in English, It is an excellent theme for filming also. Shriyut Vrindabanlal Varma has rendered unique service to Hindi literature. We owe him a debt of gratitude for giving us such a powerful book. He has rendered a great service to the country by presenting the glorious saga of the Ranee in the form of a story. It is a brilliant novel. The language is simple and effective and the interest of the reader never flags. The characters are living and powerful. The women characters are particularity powerful.

Hitvada:—Liveliness is maintained throughout.

PRICE RS. 6.

MAYOOR PRAKASHAN :--Swadhin Press, Jhansi.

'कर्मवीर' खंडवा इतने असाधारण ढंग से यह ग्रन्थ लिखा गया है कि एक बार प्रारम्भ करके समाप्त करने पर ही पाठक छोड़ेगा। अभी अभी हाल की जितनी पुस्तकें निकली हैं उनमें 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' का सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ स्थान है। यह घर-घर, हर पुस्तकालय और हर शिक्षालय में पढ़ी जानी चाहिये।

'हंस' (मासिक)—इतिहास का इतना गहरा अध्ययन, इतने, परिश्रम और उदार विचार, इतनी ओजपूर्ण और प्रभावोत्पादक शैली, भाषा पर इतना अच्छा अधिकार और फिर इतना उच्च आदर्श चरित्र लेकर लिखा हुआ यह उपन्यास हर दृष्टि से स्तुत्य है।

'हिन्दुस्तान' दिल्ली—१४ वर्षों के अन्वेषण के बाद लिखित इस उपन्यास में उसने चार चाँद लगा दिए हैं–उपन्यास पढ़ने में रोचक प्राण-प्रद और प्रेरक है। प्रस्तुत पुस्तक गढ़-कुंडार आदि सब से बढ़कर है।

'स्वतन्त्र' झाँसी—५०० से अधिक पृष्ठ के इस वृहद ग्रन्थ में सर्वत्र रसमयता, सरलता, सुगमता, उदात्त राष्ट्रीयता और शोध का प्लावन है। काव्य में वैसे सुन्दरम् ही की आराधना विशिष्ट होती है। इसमें सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का सर्वतोभद्र समन्वय है। इस ग्रन्थ को समग्र पढ़ में भी जो अपनी आंखों को सूखा और गले को साफ रख सकें उन्हें या तो पूर्ण स्थितप्रज्ञ ही कहना पड़ेगा या फिर हृदयहीन पाषाण। कट्टर रूढ़िवादी भी इसे उसी भाँति निश्शंकता से अपने घर की महिलाओं को दे सकते हैं जैसे रामायण और महाभारत को।

'विश्व भारती' शांति निकेतन, "हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने में वर्मा जी अग्रगण्य हैं। यह पुस्तक भी उनकी बहुमूल्य कृतियों में एक है।"

'लहर'–उपन्यास इतना मनोमुग्धकारी, उत्फुल्लकारी तथा भावपूर्ण है कि हिन्दी ही नहीं, अन्य प्रांतीय भाषाओं में भी इसकी जोड़ की रचना कठिनाई से मिलेगी। श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने अनेक वर्षों के परिश्रम से लक्ष्मीबाई के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्यों तथा जनश्रुतियों का संकलन करके कथानक तैयार किया है।

लेखक ने उनकी नीति-निपुणता, (स्त्री) सेना का निर्माण, उनके अद्भुत शौर्य का ऐसा ओजपूर्ण चित्रण किया है कि हृदय मुग्ध रह जाता है।

हम अपने प्रत्येक पाठक से सिफारिश करेंगे कि वह किसी भी प्रकार इस उपन्यास को हस्तगत कर अवश्य ही पढ़े। शिक्षावेत्ताओं का ध्यान भी इस उपन्यास की ओर जाना चाहिए। नवराष्ट्र निर्माण के लिए ऐसे ही उपन्यास पाठ्य-क्रम में रखे जाने के योग्य हैं।

Spark:—This is a truly national theme, also the grandest subject for Hindu Muslim Unity.

New Light:— Jhansi-ki-Rani Laxmibai is (without exaggeration) inspiring, nation-building, nerve tingling thrilling, and appealing to every Indian.

अचल मेरा कोई

लेखक—

श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, अभूतपूर्व, अतिरोचक सामाजिक रोमान्स

· प्रेस में है।

सितम्बर तक प्रकाशित होगा } मयूर-प्रकाशन झांसी { मूल्य ३।)

स्वाधीन प्रेस, झांसी।

हमारे अन्य प्रकाशन
श्री वृन्दावनलाल जी वर्मा
—: की :—
अमर लेखनी द्वारा प्रणीत

कचनार— (ऐतिहासिक उपन्यास)

विन्ध्यखण्ड की घाटियों में दबी हुई अनेक भव्य गाथाओं में से एक। सर्वत्र मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का विकसित स्वरूप। भाषा-सौष्ठव, इतिहास, तथ्य और कल्पना का अनूठा समन्वय —

सजिल्द— पृष्ठ—४२० मूल्य ४॥)

मुसाहिबजू— (ऐतिहासिक उपन्यास)

उस युग की एक बात, जब भारतीय सामंतवाद आतंकवाद के धरातल पर उतर रहा था। महलों के झरोखों से भी वेदना की गर्म श्वासें निकला करती थीं। भड़कीले गहनों और कपड़ों में लिपटी रानियों के अन्तर भी तड़पन और टीस से दबे रहते थे—और वह भी आर्थिक-हीनता से सनी। बड़ा ही उथल पुथल पूर्ण कथानक है। फिर वर्मा जी की वर्णन शैली। पृष्ठ—१३० मूल्य १॥)

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई— (ऐतिहासिक उपन्यास)

इतिहास की अपूर्व खोज। पिछले पृष्ठों में पर्याप्त पढ़ चुके हैं।

सचित्र सजिल्द— पृष्ठ—५२५ मूल्य ६)

फूलों की बोली— (सामाजिक नाटक)

स्वर्ण मोह-जनित, स्वर्ण-रसायन की क्रिया किसी समय में ऐसा रोग रहा है, जो मानव हृदय की एक भयंकर भूल बनकर हमारे समाज में वर्षों तक सना रहा। समझे-सुलझे व्यक्ति तक इस द्विविधा में लुट गये हैं। अब भी इसका अवशिष्ट किसी न किसी रूप में बना हुआ है। इस नाटक में स्वर्ण मोह की विडम्बना का अच्छा चित्रण है। नारी-हृदय वेश्या में से भी झांकता है मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। मूल्य १)

राखी की लाज (सामाजिक नाटक)

नाम से ही विषय स्पष्ट है। सजीव सम्वाद और रोचकता इस नाटक

बांस की फांस— (सामाजिक नाटक)

बांस की मार सही जा सकती है, परंतु बांस की फांस की कसक नहीं सही जाती। अति रोचक। मूल्य १)

लो, भाई पञ्चो! लो!! (एकांकी नाटक)

गावों में परमेश्वर के स्वरूप माने जाते हैं पंच और पंचायत, 'चतुरानन का दरबार' उनके अंचल में न्याय की पराकाष्ठा भी रहती है और दंभ भी। इस दिशा पर इस एकांकी में अच्छा व्यंग किया गया है। रोचकता से तो भरा पूरा है। मूल्य ।॥)

कोई समय था जब हमारे रंगमंच अटपटी हुंकारों से भरे संवादों से शोभित होते थे। अब इस स्वाधीनता के युगमें हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है विस्तृत प्रणाली से जनता की रुचिका परिमार्जन। और इस कार्य में वर्मा जी द्वारा लिखित नाटक अपूर्व हैं। ललित, साहित्यिक, रोचक और प्रभाव पूर्ण होने के साथ-साथ यह नाटक रंगमंच पर सुगमता पूर्वक अभिनय करने योग्य हैं।

※ ग्रन्थकार की अन्य रचनायें ※

—: प्रकाशित :—

गढ़ कुण्डार (ऐति०-उपन्यास)	४)	★धीरे-धीरे-(व्यंग) मूल्य	१)
विराटा की पद्मिनी ,,	४)	★प्रत्यागत (सामाजिक-उपन्यास)	१॥)
कुण्डली चक्र सामाजिक ,,	२)	★प्रेम की भेंट ,,	१॥)
सङ्गम ,,	२)	★कभी न कभी ,,	२॥)
लगन (अपूर्व रोमांस) ,,	१)	★हृदय की हिलोर (गद्यात्मक)	१)

—: शीघ्र ही प्रकाशित हो रही हैं :—

आनंदघन (ऐतिहासिक—उपन्यास)	★मङ्गल सूत्र नाटक
सत्तरह सौ इकत्तीस ,,	★झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ,,
महादजी सिंधिया ,,	★कब तक ,,
राणा सांगा ,,	★नील कण्ठ ,,
अचल मेरा कोई सामाजिक-उपन्यास	★पीले हाथ तथा अन्य एकांकी नाटक
हंस—मयूर नाटक	★कलाकार का दण्ड (कहानियां)
पायल ,,	★दबे पांव (शिकारी कहानियां)

'मयूर—प्रकाशन' झांसी।